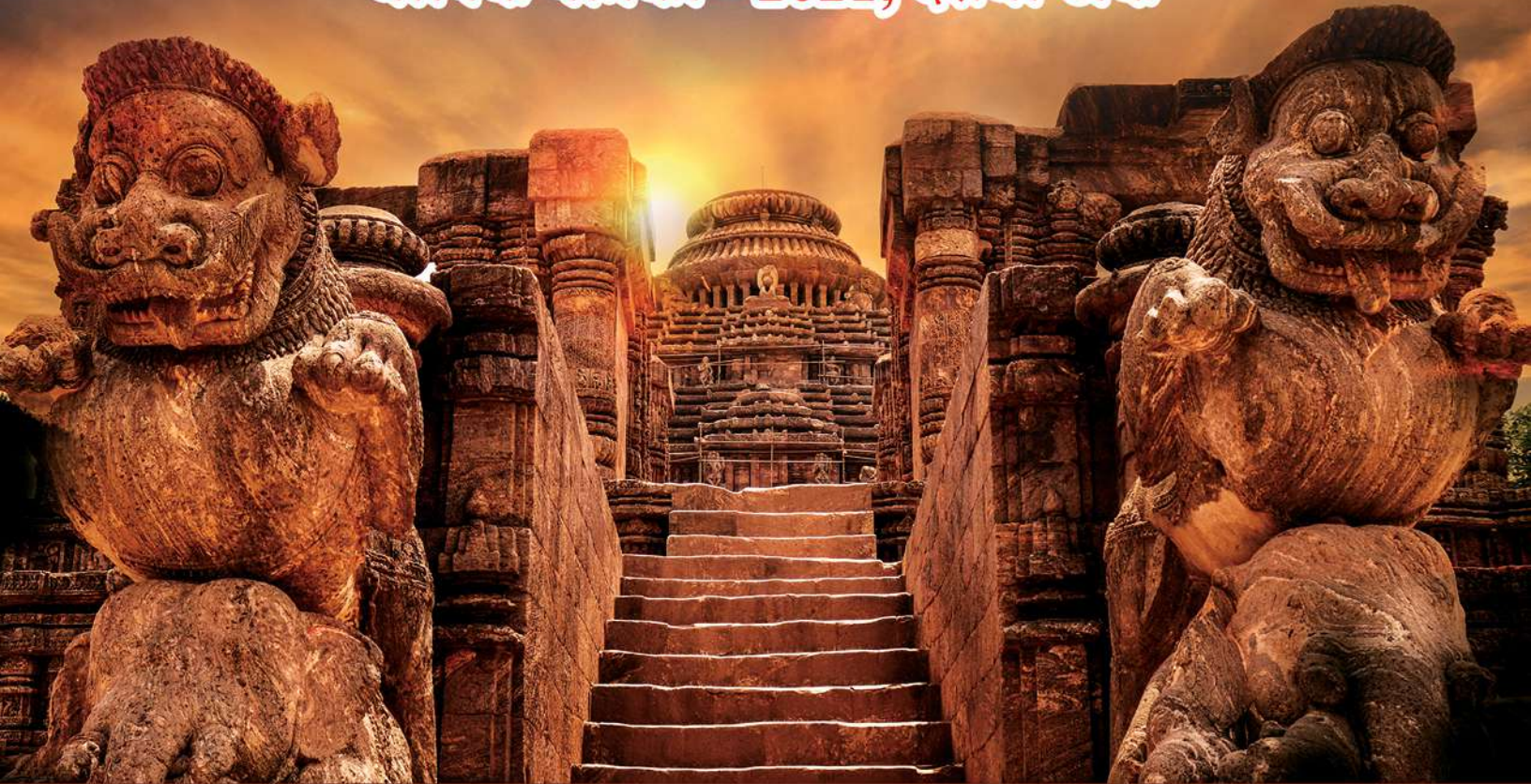




धर्मपद

वार्षिक पत्रिका - 2021, दसवाँ अंक



प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर - 751017(ओड़िशा)

हिंदी कार्यशाला





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

धर्मपद

वर्ष 2021

अंक -10

अवधि - वार्षिक

में

हार्दिक अभिनंदन



प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

पूर्व तट रेलवे, उत्तर खंड, रेल सदन

सामंत विहार, चंद्रशेखरपुर

भुवनेश्वर-751017 (ओड़िशा)

धर्मपद पत्रिका परिवार



मुख्य संरक्षक

श्री अनंत किशोर बेहेरा, भा.लेप. एवं ले.से.

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, पूर्व तट रेलवे

संरक्षक



श्री दुसासन बेहेरा, भा.लेप. एवं ले.से.

उपनिदेशक, पूर्व तट रेलवे



मार्गदर्शक

श्री धीरेन कुमार द्विवेदी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

मुख्य संपादक



श्री दीपक कुमार दास

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा



संपादक

श्री जय किशोर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सह संपादक



श्री पद्म चरण साहू

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा



सह संपादक

श्री सूरज कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

विशेष सहयोग



श्री शशि रंजन

सचिव, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, चंद्रशेखरपुर, भुवनेश्वर-751017
ई मेल : pdarlyecoastr@cag.gov.in
दूरभाष : 0674- 2301045



अनंत किशोर बेहेरा, भा.लेप. एवं ले. से.

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा , पूर्व तट रेलवे

संदेश

बड़े ही हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'धर्मपद' का दसवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक और सराहनीय प्रयास है।

राजभाषा कार्यान्वयन के संदर्भ में हिंदी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग कार्यालय के प्रत्येक कर्मचारी का उत्तरदायित्व है। अतः मैं आशा करता हूँ कि सभी कर्मचारी हिंदी भाषा का प्रयोग प्रचुर मात्रा में करेंगे तथा इस पत्रिका को सफलता की नई ऊँचाई प्रदान करने में अपना अमूल्य योगदान देते रहेंगे। उम्मीद करता हूँ कि हमारी गृह पत्रिका 'धर्मपद' का यह अंक गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में तथा हिंदी का समुचित प्रचार-प्रसार करने में सफल होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

अ. क. बेहेरा

(अनंत किशोर बेहेरा)



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, चंद्रशेखरपुर, भुवनेश्वर-751017
ई मेल : ddrlyecoastr@cag.gov.in
दूरभाष : 0674-2303511



दुसासन बेहेरा, भा.लेप. एवं ले. से.

उपनिदेशक, पूर्व तट रेलवे

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि हिंदी गृह पत्रिका धर्मपद के दसवें अंक का प्रकाशन ई-पत्रिका के रूप में हो रहा है।

राजभाषा हिंदी के विकास हेतु कार्यालय द्वारा किए जा रहे कार्य सराहनीय है। पत्रिकाओं के निरंतर प्रकाशन से राजभाषा हिंदी में कार्य करने हेतु एक उचित माहौल विकसित होता है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ साथ राजभाषा संबंधी अन्य गतिविधियों का आयोजन एक सार्थक प्रयास है।

इस पत्रिका में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों और इसके पीछे कार्यरत संपादक मंडल को इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाईयाँ।

दु. बेहेरा

दुसासन बेहेरा

{ संपादक की कलम से }



श्री दीपक कुमार दास

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा

किसी देश की सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर को भाषा के माध्यम से ही संजोया जा सकता है। समाज का स्वरूप और आईना वह भाषा होती है जो देश को एकता अखंडता के धागे में बांध कर रखती है। देश में हिंदी भाषा के लिए बढ़ते लगाव और सूचना प्रौद्योगिकी के नये आयामों के माध्यम से हम अपनी प्रिय भाषा को प्रयोग में लाने और सार्थक सरल बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इसी कड़ी का एक रूप 'ई-पत्रिका' भी है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा पारिचालित वार्षिक कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करते हुए तथा राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेशों के अनुपालन में हम अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिंदी पत्रिका का प्रकाशन करते हैं।

कार्यालयीन पत्रिकाएं जहाँ एक ओर कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों का साधन है, वहीं यह कर्मचारियों को अपने विचार एवं गतिविधियों को प्रस्तुत करने हेतु मंच प्रदान करती हैं। अपने नए रंग-रूप और साज-सज्जा में सजी हिंदी ई-पत्रिका 'धर्मपद' का यह अंक राजभाषा हिंदी को उन्नत पथ की ओर ले जाने का एक विनम्र प्रयास है।

'धर्मपद' पत्रिका के माध्यम से न केवल नवल लेखक, लेखिकाओं, कवि, कवयित्रियों की रचनाएं पाठकों तक पहुंचती हैं अपितु हिंदी के प्रति हम अपने कर्तव्य का निर्वहन भी कर पा रहे हैं। यह प्रयास भले ही सागर में बूंद के समान हो परंतु इन्हीं प्रयासों से हम हिन्दी को राजभाषा के आधिकारिक दर्जे के साथ-साथ शायद भविष्य में कभी राष्ट्रभाषा का सम्मान भी दिला सकने में सफल हो सकते हैं।

एक संपादक के रूप में सभी रचनाकारों से मेरा अनुरोध है कि आप हिंदी की अधिकाधिक उत्कृष्ट रचनाएं इस पत्रिका के जरिये पाठकों तक पहुंचायें तथा पाठकगण भी अपने विचार, सुझाव हमें देते रहें जिससे पत्रिका के स्वरूप को उत्कृष्ट बनाया जा सके।

श्री दीपक कुमार दास

श्री दीपक कुमार दास

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1	सफ़र	श्री बिक्रम महापात्र वरिष्ठ लेखापरीक्षक	1
2	धुंधली लकीरें	श्री चन्दन कुमार लेखापरीक्षक	3
3	नजर	श्री विभास चन्द्र, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	4
4	नया जन्म	श्री सौरभ दास, सहायक पर्यवेक्षक	5
5	प्रकृति का प्रकोप	श्रीमती सुषमा चौबे	7
6	गुड न्यूज	श्रीमती रोमा कुमारी	8
7	अहसास किसी को नहीं	सुश्री प्रेरणा किशोर	10
8	महंगाई	श्री सूरज कुमार, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	11
9	जिंदगी का पड़ाव	श्रीमती बबीता दास	12
10	विस्थापन: झारखंड की एक बड़ी समस्या	श्रीमती सुष्मिता कुमारी	13
11	मेरी माँ	सुश्री इप्सिता साहु	14
12	दान का महत्व	श्रीमती अनिशा कुमारी	15
13	गुब्बारों के संग	सुश्री श्रद्धा राउत	16
14	भलाई	सुश्री शुभस्मिता नायक	16
15	जिंदगी	श्री बिमल टोपनो, वरि. लेखापरीक्षक	17
16	विचार	सुश्री स्वस्तिक षड़ंगी	17
17	दो दोस्त	पुरुषोत्तम किशोर	19
18	कितना बेबस है इंसान	श्री मानस रंजन जेना, लेखापरीक्षक	20
19	यादें	श्री धनंजय किसान	21
20	एक भारत श्रेष्ठ भारत	श्री हरि मोहन कुमार, लेखापरीक्षक	22
21	कोरोना का चक्रव्यूह	श्री दिगम्बर पंडा, लिपिक	23
22	एक मुस्कान लिए फिरता हूँ	श्री सिंगराई मुर्मू, आशुलिपिक	24
23	पुरी में रथ यात्रा	श्री निरुपम कर्मकार, लेखापरीक्षक	25
24	नारी	श्रीमती भबानी मुर्मू	26
25	कार्य का महत्व	सुश्री स्वागतिका साहू	27
26	विरह	श्रीमती भानुमति किसान, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	28
27	टोक्यो ओलंपिक में भारत	श्रीमती नीतु चंद्रा	29
28	मैंने पूछा!	सुश्री स्नेहा राउत	31
29	मेड इन इंडिया	श्रीमती सुचित्रा कर्मकार	32
30	महत्वपूर्ण वाक्य	श्री बी. रामचंद्र राव, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	33
31	सब घूमते हैं !	श्री गोबिन्द दीप, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	34
32	काला बादल	श्री निरंजन परिडा, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	35
33	कोरोना महामारी 2021	श्री कृष्णा कुजूर, संबलपुर	36
34	माँ नहीं तो और कौन	श्री नवीन कुमार चौबे, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	38
35	सच्चा दोस्त	सुश्री सागरिका साहू, पिता- श्री गणेश्वर साहू, लेखापरीक्षक	39
36	पर्यावरण हमारा भविष्य है	श्री मिन्टू हालदार, लेखापरीक्षक	40
37	ईश्वर की मर्जी	श्री कृष्णचंद बेहरा, एम. टी. एस.	41
38	गोलघर	श्री राजु कुमार, आ०प्र०प्र० “बी”	42
39	हिंदी दिवस-2020	राजभाषा अनुभाग	43
40	आपके पत्र	आपके पत्र	44



श्री बिक्रम महापात्र

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ओ भाग्यवान! जरा जल्दी कीजिए, ऑफिस के लिए लेट हो रहा हूँ। बाथरूम से निकलते ही मैं गला फाड़ने लगा। रसोईघर से श्रीमती जी की आवाज आई, “अरे! बाथरूम से तो निकलो, नाश्ता कहाँ लगाऊँ! क्या नाश्ता बाथरूम लेकर जाऊँ?... जल्दी है तो खुद उठा लो.... ले जाओ.....और खा लो समय पर क्यों तैयार नहीं होते हो?” बस मेरा मोटा आवाज जरा धीरे हो गया। मैंने सोचा अगर अभी पंगा ले लिया तो शाम तक भूखा रहना पड़ेगा। जरा गला धीमा करके बोला, “हाँ भाई! सुबह से मॉर्निंग वॉक करो, बाजार जाओ, ऐसे में टाइम कैसे निकल जाता है पता ही नहीं चलता, जैसे रॉकेट चाँद पर जा रहा है।” तब तक श्रीमती जी टेबल के ऊपर नाश्ता रखकर बोली, “बाबू का बिस्किट नहीं है और कल के लिए सब्जी कुछ भी नहीं है, ऑफिस से लौटते वक्त ले आना।” मैंने चिढ़ते हुए बोला, “कल शाम को तो मैं आलू लेकर आया था, बोल देते! बाकी सामान भी ले आता, डेली-डेली क्यों बोलती हो।” श्रीमती जी गुर्गुर कर बोलीं.....तो। मैं उनसे उस वक्त तो कुछ बोल नहीं पाया पर यह सोचने लगा, क्या यह आदत इसी की है या बाँकियों का भी नहीं..... नहीं..... अगर और छेड़ते तो फिर वही जवाब आएगा.... “ये तो मैं हूँ जो कि आपका साथ निभा रही हूँ, और कोई होती तो कब की चली गई होती।”

अरे भई अब आपलोग ही बताइए! “सबैरे-सबैरे एक लड़ाई घर पर करो दूसरी रास्ते पर और तीसरी ऑफिस में फाइल के साथ। शाम को ऑफिस से छुट्टी होते ही आदमी सोचता है कि कैसे घर पहुँचे और थोड़ा रिलैक्स करें, टीवी का सीरियल देखें। अगर उसी बीच आपको शाम के समय मार्केटिंग के लिए बोला जाए तो क्या करेंगे.....?” अपनी सोच को ब्रेक लगाते हुए देखा घड़ी 8:15 की तरफ इशारा कर रही है। मैंने दरवाजा खोलते हुए आवाज लगाया. “ऑफिस जा रहा हूँ दरवाजा बंद कर लेना।” अंदर से आवाज आई, ठीक है! बिस्कुट भूलना नहीं.... ठीक है..... ठीक है.....। मैं बड़बड़ाया, “आज तो मेरा किस्मत बिस्कुट पर ही लिखा है.....” अंदर से आवाज आई, क्या बोलें?..... कुछ नहीं..... कुछ नहीं.....मैं और रुकना मुनासिब नहीं समझा। जल्दी-जल्दी स्कूटी निकाला और अपने ऑफिस के लिए निकल पड़ा।

यह मेरा प्रत्येक दिन का रूटीन था मेरा ऑफिस भुवनेश्वर में और मैं 30 किलोमीटर दूर कटक में रहता था। यहाँ से हजारों हजार कर्मचारी प्रतिदिन कटक से भुवनेश्वर आते-जाते हैं। मैं लिंक रोड से डेली ढेंकनाल पैसेंजर से आता-जाता था। उस दिन जब मैं पार्किंग स्टैंड पर गाड़ी रखकर प्लेटफार्म की तरफ बढ़ रहा था कि एक

सज्जन ने आवाज लगाई, “भाई साहब पैसेंजर कब आती है?” तो मैंने बोला, अपने समय पर वह आदमी घूरकर बोला, “मतलब.....? अरे भाई डेली आते हो पता नहीं की ट्रेन कब आती है?” बात करते-करते कब प्लेटफार्म में पहुँच गया पता ही नहीं चला। मेरे और भी चार साथी इंतजार कर रहे थे। नजदीक पहुँचते ही एक साथी से पूछा, “आज इतनी भीड़ क्यों है?” दिलीप जी बोले, “अरे भाई आपको पता नहीं कल जगन्नाथ जी के सुनाबेस है इसीलिए बहुत भीड़ है।” तब तक दूर से ट्रेन की हॉर्न सुनाई दी और हम लोग तैयार हो गए जैसे 100 मीटर की रेस में खिलाड़ी तैयार रहते हैं।

ट्रेन रुकते ही हम लोग एक बोगी में चढ़ गए। बैठने के लिए सीट तो नहीं था पर खड़ा होने के लिए जगह बना ली। एक सीट पर रुमाल पड़ा देखकर मैडम (हमलोगों के साथ डेली भुवनेश्वर आया-जाया करती थी) को बैठने के लिए बोल दिया। मैडम थोड़ा हिचकिचाते हुए बैठ गई। तभी रुमाल रखने वाला व्यक्ति वहाँ पहुँच गया और बोला, “सॉरी मैडम, मेरा सीट है, यहाँ रुमाल रखा था।” आपको तो पता है घर से बाहर तक पंगा लेने की मेरी आदत है। उस व्यक्ति की बात सुनकर मुझसे रहा नहीं गया, मैंने झट से बोला, “भाई साहब एक महिला बैठी है, बस आधे घंटे की तो बात है।” अरे नहीं-नहीं.... मैंने तो बैठने के लिए सीट रखी थी... रुमाल वाले व्यक्ति ने गुस्से से बोला। य सुनकर मैंने बोला, “फिल्म हॉल में टिकट के लिए जब दो घंटे लाइन में लग सकते हो तो क्या आधा घंटा खड़ा नहीं हो सकते?” उस वक्त उस भाई साहब को और भी गुस्सा आ गया बोला, “मैंने तो रुमाल डाल कर रखा था।” अब मैं भी कहां छोड़ने वाला था, मैंने कह दिया, “आप सीट के ऊपर रुमाल रखकर बोलते हो कि यह सीट मेरा है, कल को एक ट्रेन के ऊपर रुमाल रखकर बोलोगे कि यह ट्रेन मेरा है।” यह बात सुनकर मेरे साथ सफर करने वाले सारे मुसाफिर हँसने लगे। उसी बातचीत के दौरान अगला स्टेशन आ गया और वह भाई साहब उतर गए और हम दोस्तों को बैठने के लिए एक सीट भी मिल गया।

उसी सफर के दौरान एक भिखारी आया और भीख माँगने लगा। मैं उसे देखकर बोला, “भाई तुम तो देखने में हड्डा-कड्डा लग रहे हो, मेहनत मजदूरी करो, भीख क्यों माँग रहे हो?” उसने फिल्मी अंदाज से बोला, “सर मेहनत ही तो कर रहा हूँ, भीख माँगना कोई मेहनत से कम है क्या? हमारे देश में कौन भीख नहीं माँगता..... नेता वोट के लिए भीख माँगते हैं..... आप लोग मंदिर में जाकर बच्चों की पढ़ाई के लिए, शादी के लिए भीख माँगते हो..... बाकी कोई ना कोई आदमी किसी ना किसी बहाने भीख तो माँगता ही है.....” यह सुनकर मेरे दोस्त ने बोला, उसे कुछ दे दे ना.... देकर विदा कर.....। तो मैंने पॉकेट से 2 रुपये निकाल कर दिया। उसने 2 रुपये देखकर बोला, “देना है तो 10 रुपये दीजिए।” मैंने कहा, “अरे भाई तुम क्या हाईटेक भिखारी हो? दस रुपये लोगे....!” उसका स्वर थोड़ा धीमा हो गया और वह धीमे स्वर में बोला, “सर मैं भिखारी नहीं हूँ, एक प्राइवेट कंपनी में सिक्योरिटी गार्ड हूँ और अनाथ बच्चों के लिए एक अनाथालय चला रहा हूँ। उनकी परवरिश के लिए रात में सिक्योरिटी गार्ड की ड्यूटी करता हूँ और दिन में आपलोग जैसे आदमियों से कुछ पैसा इकट्ठा करता हूँ, उसी में हमलोगों का जिंदगी गुजर जाता है। मैंने वह दो रुपया का सिक्का जो पकड़ा हुआ था उसे ऊपर नीचे देखा और पैंट की पॉकेट में डालते हुए शर्ट की पॉकेट में हाथ डाला। मेरे शर्ट की पॉकेट से जितना निकला सब उसे दे दिया। उसने बोला, “सर यह तो सौ रुपये हैं।” मैंने धीरे से सिर ऊपर-नीचे किया और बोला, “ले जाइए।” वह मुझे धन्यवाद देते हुए चला जा रहा था और मैं उसे देख रहा था

{ धुंधली लकीरें }



श्री चन्दन कुमार
लेखापरीक्षक

कभी अपने हाथों के लकीरों को आपने गौर से देखा है, कुछ लकीरें काफी मोटी होती है जो बिल्कुल साफ-साफ दिखती है, परन्तु कुछ लकीरें ऐसी भी होती है जिसे हम देखकर भी अनदेखा कर देते हैं क्योंकि हमें लगता है की उन धुंधली लकीरों का कोई महत्व नहीं है, परन्तु यकीन मानिए सभी लकीरों का कुछ ना कुछ मतलब होता है।

वैसे ही हमारे जीवन में कुछ पल, कुछ रिश्ते, कुछ बातें ऐसी होती है जिसे हम कभी भूल नहीं पाते है परन्तु बहुत सारे ऐसे लम्हें, रिश्तेदार और भी बहुत कुछ जिसे हम समय के साथ भूलते जाते हैं। जैसे-जैसे वक्त बीतता जाता है धुंधली लकीरों की तरह वो सारे पल और भी ज्यादा धुंधली हो जाती है, वो पल जो कभी हमने ऐसे दोस्तों के साथ भी बिताया था जो आज हमारे दिलो दिमाग से भी निकल चुके है, वो दूर के रिश्ते जहां हमने अपने बचपन के कुछ पल बिताये थे उनकी यादें भी धीरे-धीरे धुंधली सी होने लगी है, परन्तु यकीन मानिये जैसे हमारे हथेली की धुंधली लकीरों का महत्व है वैसे ही, वैसे मित्र, वैसे रिश्ते जो आज हमें याद भी नहीं है, उनका भी महत्व बहुत ज्यादा है, परन्तु वक्त के साथ चलने के कारण वो आज कहीं पीछे छुट गये हैं।

हमें वो टीचर तो याद है जिसने हमें कम्पटीशन की तैयारी करवाई थी पर हम उन्हें भूल चुके हैं जिन्होंने हमें लिखना सिखया था, कुछ लोग जो अचानक ट्रेन में या ऐसे जगह जहां हमें किसी के मदद की जरूरत होती है अचानक मिल जाते हैं और हमारी मदद करके चले जाते हैं, उन सारे पलों को एक समय के बाद हम भूल जाते हैं, इसलिए जब भी वक्त मिले उन सारे धुंधली यादों को याद करके उनका धन्यवाद करना चाहिये क्योंकि आज हम जो भी हैं उनमें उनका भी छिपा योगदान है जो बिल्कुल धुंधली लकीरों की तरह हैं जो जल्दी से दिखते नहीं हैं परन्तु वो बिल्कुल नीव की ईंट की तरह होते हैं।

{ } { } नजर { } { }



श्री विभास चन्द्र

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

नजरोँ के न जाने कितने अफसाने हैं,
नज़रोँ के ना जाने कितने कारनामे हैं।
कभी पाक नजर, तो कभी नापाक नजर,
कभी नजरोँ रूहानी, तो कभी नजरोँ शरारती।

कभी शर्म से झुकी नजरोँ, तो कभी फक्र से उठी नजरोँ
कभी नजरोँ चार हो जाना, तो कभी नजरोँ चुराना।
कभी किसी के नजरोँ में चढ़ जाना,
तो कभी किसी के नजरोँ से गिर जाना।

कभी किसी से बचती नजरोँ,
तो कभी किसी की एक झलक को तरसती नजरोँ।
कभी हया की मिसाल बयाँ करती नजरोँ,
तो कभी बेहयाई की हदें तोड़ती नजरोँ।

कभी घूर-घूर कर परेशान करती नजरोँ,
तो कभी सुकून की फुहार बन बरसती नजरोँ।
कभी नजर नजर में ही आस का बाँध जाना,
तो कभी इक नजर का ही निराश कर जाना।

कभी खुशी से झूमती नजरोँ,
तो कभी गम से ये बेजार नजरोँ।
कभी इक नजर में ही इकरार हो जाना,
तो कभी नजर-नजर में ही इंकार का संदेशा पहुँचा देना।

नजरोँ के न जाने और कितने रंग-रूप हैं,
ये दुनिया तो बस नजर-नजर का खेल है।

नया जन्म



श्री सौरभ दास

सहायक पर्यवेक्षक

वैसे तो घर परिवार से मेरी प्रायः बातचीत हो जाया करती है, पर मई 2021 की एक शाम मेरे मोबाईल पर इनकमिंग कॉल की संख्या बढ़ गई, जिसका वजह था बंगाल की खाड़ी से उठने वाला चक्रवाती तूफान जिसे 'यास' नाम दिया गया था। मेरी पत्नी, माँ, एवं मेरे सभी परिजन परेशान हो गए थे। सभी की ओर से अपने आप को सुरक्षित रखने की हिदायतें आ रही थी। एक तो कोरोना और ऊपर से ये चक्रवाती तूफान "यास" ! ये तो वही वाली बात हो गई 'आसमान से गिरा खजूर में अटका'। मैंने मन ही मन ईश्वर को कहा, "लगता है इस बार बच्चे की जान लेकर ही मानोगे क्या"।

आपको बता दूँ कि मुझे इस चक्रवाती तूफान 'यास' के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं था। मैंने तुरंत चक्रवाती तूफान के बारे में अपने मोबाईल में गूगल सर्च किया। जिससे पता चला कि चक्रवात या 'साइक्लोन' ग्रीक शब्द 'साइक्लोज' से बना है, जिसका मतलब है वैसा सांप जिसने कुंडली मार रखी हो और हमले के लिए तैयार बैठा हो। इसमें कम दबाव के क्षेत्र में हवा अंदर की ओर चक्कर काटती रहती है। यह वायु-मंडलीय उलटफेर (विक्षोभ) की वजह से पैदा होता है। चक्रवात आमतौर पर खराब मौसम जैसे कि तेज तूफान और भारी बारिश के साथ आता है। कोई भी तूफानी हवा तभी चक्रवात कहलाती है, जब वह कम से कम 74 मील प्रति घंटे (119.091 किमी प्रति घंटे) की रफ्तार पकड़ ले। जब तूफान चक्रवात का शक्ल अख्तियार कर लेता तब उसका एक नाम दिए जाने की परंपरा है। चक्रवात का नाम वर्ल्ड मेट्रोलॉजिकल ऑर्गेनाइजेशन/यूनाइटेड नेशन का इकोनॉमिक एंड सोशल कमीशन फॉर एशिया एंड पेसिफिक और पैनल ऑन ट्रॉपिकल साइक्लोन जैसे संगठनों की ओर से तय किया जाता है। इसबार 'यास' चक्रवात का नामकरण ओमान ने किया था। 'यास' का अर्थ होता है-पेड़ा।

इंटरनेट से मिली जानकारी से ये स्पष्ट हो चुका था कि 'यास' चक्रवात 26 मई 2021 को दोपहर या उसके बाद ओड़िशा के बालासोर के पास धरती से टकराएगा जिसे लैंडफॉल की प्रक्रिया कहते हैं। यह तो तय था कि तेज तूफान के साथ भारी बारिश होने वाली है। फोन पर परिवार वालों की बातें सुन सुनकर मेरे कान पक गए थे। मुझे भी अब चिंता होने लगी थी। तभी मेरी नजर ऑफिस के छुट्टी वाली लिस्ट पर पड़ी। भगवान का मैं शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि 26 मई 2021 को बुद्ध पूर्णिमा के शुभ अवसर पर हमारे

कार्यालय में छुट्टी थी। कम से कम तूफानी बारिश में मुझे घर के बाहर तो नहीं निकलना पड़ेगा! ये जानकर मेरी चिंता थोड़ी कम हुई। मैंने तुरंत ये जानकारी अपने परिवार वालों को दी। उनको बताया कि चक्रवात वाले दिन मैं अपने घर पर ही रहूँगा। ये सुनकर मेरे शुभचिंतक ने राहत की साँस ली। उन्होंने कहा, 'चलो घर पर रहोगे तो सुरक्षित रहोगे'।



लैंडफॉल से दो दिन पहले से ही भुवनेश्वर में दिनरात बारिश शुरू हो गई थी। ओडिशा सरकार ने सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अपने राज्य में अलर्ट जारी कर दिया था। भुवनेश्वर आने वाली कई फ्लाइट्स को रद्द कर दिया गया था। सुरक्षा और बचाव के लिए कई एन.डी.आर.एफ. की टीमें भी लगाई गई थीं। बिजली गुल हो जाने के डर से मैंने अपना मोबाईल फोन और पॉवर बैंक पहले ही फुल चार्ज कर लिया था।

आखिर लैंडफॉल वाला दिन भी आ गया। मैंने दिन का खाना भी सुबह ही बना लिया था। बस ईश्वर से मैं अपने सकुशल होने की प्रार्थना कर रहा था। उस दिन चक्रवात 'यास' ओडिशा के भद्रक जिले में धामरा के उत्तर और बहनागा ब्लॉक के निकट बालासोर से 50 किलोमीटर दूर तट पर लगभग सुबह नौ बजे टकराया और यह प्रक्रिया अपराह्न एक बजकर 30 मिनट पर पूरी हुई।

इस दौरान समंदर में ऊँची-ऊँची लहरें उठने लगी और तटीय क्षेत्रों के रिहायशी इलाकों में पानी घुस गया। भुवनेश्वर शहर में बारिश के साथ-साथ तेज हवाएं भी चलने लगी थी। मैंने तो अपने आप को कमरे में बंद कर लिया था। तेज हवाओं से खिड़कियों के पल्ले आवाज कर रहे थे जब कभी बिजली चमकती तो इतनी जोर से आवाज आती थी कि मानो कान का चादर फट जाए। बिजली कड़कने के दौरान मैं अपने दोनों हाथों से अपने कान को बंद कर लेता था।

किसी तरह भगवान का नाम जपते-जपते दिन बीत गया। अब चक्रवाती तूफान 'यास' ओडिशा से जा चुका था। अब खतरा टल गया था। उस दिन मुझे लगा कि जैसे मुझे 'नया जन्म' मिला हो।

{ प्रकृति का प्रकोप }



श्रीमती सुषमा चौबे

पति- श्री नवीन कुमार चौबे, सहा. ले.प. अधिकारी

सतत एकरूपता के विमुख
मौसम बदल रहा नित्य रुख ।
अंधदोहन और प्रदूषण चलते
प्रकृति जा रही व्यवहार बदलते ॥
हुई क्रुद्ध, कुपित, लगती सृष्टि
भीषण बारिश, कहीं अनावृष्टि ।
बिगड़ा मौसम बढ़ने से लोभ
वायुमंडल में बनते विक्षोभ ॥
आपदा विभीषिका मुँह खोले
डोले धरती, पड़ते ओले ॥
तेज हवाएँ भारी बारिश
मन में कैद, अधूरे ख्वाहिश ॥
ताऊते के बाद तूफान यास,
तटीय क्षेत्रों का कर रहा विनाश ।

प्रभावित ज्यादा उड़ीसा बंगाल
पूर्व तैयारियों पर उठते सवाल ॥
दैनिक-श्रमजीवी, विक्रेता लाचार
प्रकृति प्रहार, मौसम की मार।
फल सब्जियों की भारी किल्लत
किसानों की गई मारी किस्मत ॥
कुदरत को जब आती चिढ़
अस्पतालों में बढ़ जाती भीड़ ।
धँसती जमीने सड़कों पर पेड़
जलमग्न करते टूटे बाँध मेड़ ॥
घर से निकलना है प्रतिकूल
प्रकृति छेड़ने की है भूल ।
आराधक रहें किसी आकृति की
सेवा जरूर करें प्रकृति की ॥

{ गुड न्यूज }



श्रीमती रोमा कुमारी

पति-श्री सूरज कुमार, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

बात उन दिनों कि है जब मेरी नई-नई शादी हुई थी। शादी के पहले मन में बहुत उधेड़बुन रहती थी। अपने भविष्य के बारे में विभिन्न चिंताएं मन में आती थी। मेरी स्नातक तक की पढ़ाई पूरी हो चुकी थी। अब बारी शादी की थी। परिवार में मेरी शादी को लेकर चर्चाएं शुरू हो चुकी थी। ये तो तय था कि शादी अरेंज मैरिज ही होगी। किसी भी प्रोग्राम या फंक्शन में जाती थी तो परिवार वाले शादी की बात चलाने लगते थे। मुझे उस समय बड़ा अजीब महसूस होता था। परिवार वालों के दबाव में आकर पापा ने मेरे लिए लड़का देखना भी शुरू कर दिया था। शादी को लेकर विभिन्न सवाल मेरे मन में उमड़ने लगे थे, जैसे - शादी कब होगी? ससुराल कैसा होगा? वहाँ के लोग कैसे होंगे? परिवार के सदस्यों का मेरे प्रति व्यवहार कैसा होगा-?, इत्यादि। आखिर में वो दिन भी आया जब मेरी शादी तय हो गयी। परिवार वालों का खुशी से ठिकाना न रहा। पर कोई मुझसे भी तो पूछे कि उस समय मेरी हालत क्या थी? मन में विचारों के बवंडर आपस में टकड़ा रहे थे। मन तो आखिर मन होता है!, अगर मन को थोड़ा समय दे दिया जाए तो विचारों का बवंडर अपने आप शांत हो जाता है। मेरे साथ भी वैसा ही हुआ।

वैसे शादी से पहले 'छेका' होना बाँकी था। हमारे यहाँ शादी से पहले 'छेका' की रस्म होती है जिसे कहीं-कहीं पर 'रोका' भी कहा जाता है। इसमें वर यानि लड़का पक्ष दुल्हन को कुछ फल, कपड़े, संगार के समान, आभूषण इत्यादि नेग के रूप में देकर लड़की यानि दुल्हन को छेकते/रोकते हैं अर्थात इस रस्म के पश्चात अब लड़की कहीं दूसरी जगह शादी नहीं कर सकती। इसे दूसरे रूप में समझे तो इसे एक एडवांस पेमेंट कहा जायेगा जिसकी डिलीवरी शादी के दिन होती है। मेरा छेका का रस्म भी ठीक से संपन्न हो गया।

अब आई शादी की बारी! शादी की तिथि को लेकर दोनों पक्ष में तालमेल बैठाना था। पंडित जी ने कुछ शुभ मुहूर्त की तिथि का विकल्प दिया जिसमें एक डेट पर दोनों पक्षों की सहमति बनी। अंततः शादी की तिथि तय हो गई। शादी भी धूमधाम से हो गई। फिर विदाई की घड़ी आई जो कि बहुत ही दुखदायी था। एकाएक सभी पुराने रिश्ते नाते खत्म होते प्रतीत हुए, मानो ऐसा लग रहा था अब सब मायके वाले बिछड़ने वाले थे। आँखों से अश्रुधारा निकल रही थी। सभी अपने अब पराये हो चले थे। फिर भी सभी मुझे हिम्मत देने पर लगे हुए थे, वे मेरा ढाढ़स बढ़ा रहे थे। फिर हमारी कार चल पड़ी ससुराल की ओर! धीरे-धीरे परिवार, गली, मोहल्ले गाँव सब ओझल होते चले गए।

हमारी गाड़ी अब ससुराल पहुँच चुकी थी। मैं देखा कि सभी हमारे स्वागत के लिए खड़े थे। पहले हमारी आरती हुई। आसपास की कुछ बच्चे एवं स्त्रियां कार को चारों ओर घेरे हुए थे। सभी दुल्हन की झलक पाने को उत्सुक थे। इसी बीच कुछ टोकरीयाँ/ डलिया मंगवाई गईं। मुझे टोकरी में पैर रखते हुए घर के अंदर प्रवेश करना था। मैं अपने पाँव बिना जमीन पर रखे घर की अंदर दाखिल हुई। अब सभी से आशीर्वाद लेने की बारी थी।

हमारे यहाँ अभी भी झुककर पैरों की उंगलियों की छूकर प्रणाम करने की परंपरा है। आजकल के नौजवान तो घुटने तक भी झुक जाए तो बहुत है। सबसे पहले हम दोनों नव दंपति घर में सबसे बड़ी नानी जी को पाँव छूकर प्रणाम किया तो उनके मुख से निकला, "दूधो नहाओ पुतो फलो"। जब दादाजी के पैर छुए तो उन्होंने कहा, "सौभाग्यवती भवः, जल्दी से वंश को आगे बढ़ाओ। फिर मम्मी जी के पैर छुए तो उन्होंने कहा, "खुश रहो, जल्दी से पोता लाओ"। उसके बाद पापा जी ने कहा "सदा सुहागिन रहो, जल्दी से घर का चिराग लाओ"। फिर बुआजी की आशीर्वाद देने की बारी आई तो उन्होंने कहा "हमेशा फूलो फलो"। फिर मौसी जी ने खुशहाल जीवन के साथ परिवार को आगे बढ़ने का आशीर्वाद दिया। फिर मामी जी ने आशीर्वाद देने के साथ यह भी कहा कि "जल्दी से दो से तीन हो जाओ"। इस तरह विभिन्न आशीर्वाद के साथ मेरा ससुराल में स्वागत हुआ। मुझे एक बात का आश्चर्य हुआ कि सभी लोग मुझे ही दो से तीन होने का आशीर्वाद दे रहे थे जैसे कि मैं अकेले ही घर का चिराग ले आऊँगी! इस प्रकार ससुराल में पहला दिन आशीर्वाद लेते-लेते बीत गया।

फिर धीरे धीरे ससुराल में समय बीतता गया। दिन अच्छे से कट रहे थे। ससुराल में छह महीने बीत गए। इस दौरान जब भी कोई घर आता तो कहता, "बहु 'गुड न्यूज' कब दे रही हो?" मैं जब भी किसी को फोन करती तो वो बोलते, "अच्छी खबर कब सुना रही हो"? जब ननद से बात होती तो कहती, "भाभी! 'फैमिली प्लानिंग' कब कर रहीं हैं"? मैं इन बातों को इग्नोर कर दिया करती थी। एक दिन मेरे देवर ने मुझे कॉल किया और बोला, "भाभी! भतीजा का दर्शन कब करा रहे हैं?" और तो और एक दिन मेरे मायके वालों ने भी पूछा कि, "बेटी! बहुत दिन हो गए, 'शुभ समाचार' कब दे रही हो? ससुराल में सब ठीक तो है न"? सबों को एक अजीब बेचैनी सी थी। इन सब बातों से मैं तंग आ चुकी थी। इस कारण मैंने सबों से बातें करना भी बंद कर दिया।

इस तरह हमारे ऊपर परिवार एवं रिश्तदारों का दबाव बढ़ गया। मैं परेशान सी रहने लगी थी। फिर एक दिन अपने मन की व्यथा अपने पतिदेव को बताई, तो वे भी अपने परिवार को बढ़ाने को राजी हो गए। अंततः 'गुड न्यूज' वाला भी दिन आ गया। पर आज तक मुझे ये समझ नहीं आया कि सब लोग इतनी जल्दी हाथ धोकर 'गुड न्यूज' के पीछे क्यों पड़े रहते हैं?

{अहसास किसी को नहीं}

जो आँखों के सामने प्रस्तुत होता है
 इंसान भरोसा उसी पर करता है
 पर्दे के पीछे लाखों राज छिपे होते हैं
 यह जानकर भी उस राज तक पहुंचने की कोशिश नहीं करता है।
 झील का बहता हुआ जल और उसकी लहरें कितनी खूबसूरत प्रतीत होती है
 पर उन लहरों को जन्म देने के लिए जल कितनी ठोकरें खाता है !
 उसका अहसास किसी को नहीं है।
 डूबते हुए सूरज की झलक भी आँखों को कितनी भाती है
 पर उस डूबते सूरज का सफ़र अब तक खत्म नहीं हुआ फिर भी
 जाते-जाते कितनी सुकून दे जाता है!
 इस थकावट का एहसास किसी को नहीं है।
 पतझड़ के मौसम में सबको बड़ा आनंद आता है
 पेड़ों से झड़ती हुई पत्तियों को देखकर खूबसूरती का इल्तिजा किया करते हैं!
 यहाँ तो वृक्षों को उनके अंगों से दूर होता देखकर भी
 उस दर्द का अहसास किसी को नहीं है।
 माना कि यह सारे प्रकृति के नियम हैं,
 पर उन नियमों में न जाने कितने दर्द के रस्मों को निभाना होता है!
 इंसान कभी उनके दर्द को समझ नहीं पाया है,
 जिस प्रकृति के आंचल में वह हर पल रहता है।
 फिर जाने क्यों उसके दर्द को कोई समझ ले बिना उसके बयान किए,
 ऐसी आशा क्यों रखता है?
 जब वह खुद किसी के दर्द को नहीं समझता है।

सुश्री प्रेरणा किशोर

पिता-जे. किशोर, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

महँगाई



श्री सूरज कुमार

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

भाई साहब! आप कहाँ जाएँगे? बस कंडक्टर ने एक यात्री से पूछते हुए अपना किराया माँगा। उस यात्री ने बोला, " मुझे विजयनगर जाना है।" ठीक है बीस रुपये दीजिए, बस कंडक्टर ने यह कहते हुए अपना हाथ बढ़ाया। यात्री ने भी बुलंद आवाज में कहा, "इतना कैसे, सारा बस का किराया मुझसे ही लोге क्या? देखते नहीं मैं स्टूडेंट हूँ।" ठीक है भैया जो आपकी मर्जी हो दे दो, कंडक्टर ने कहा। उस विद्यार्थी ने शान से कंडक्टर के हाथ में दस के नोट रख दिया। कंडक्टर पैसे लेकर चुपचाप आगे बढ़ गया।

कंडक्टर किराया माँगते-माँगते जब आगे वाली सीट पर पहुँचा तो वहाँ से भी किराये को लेकर नोकझोंक सुनाई दी। यात्री बोला पहचानते नहीं मैं मुखिया जी का लड़का हूँ। इस पर कंडक्टर बोला, "तो क्या हुआ बस में डीजल नहीं लगता क्या? कृपया बस का किराया दीजिए।" कुछ यात्रियों ने भी बस कंडक्टर का समर्थन किया। तब जाकर मुखिया के बेटे ने किराया दिया।

कुछ देर बाद बस में कुछ युवक चढ़े। जब कंडक्टर ने उनसे किराया माँगा तो उनमें से एक ने कंडक्टर के गाल पर तमाचा जड़ दिया, और बोला रामपुर गाँव के लोगों से किराया माँगते हो। कंडक्टर मन मसोसकर कर रहा गया। किसी अन्य यात्रियों की भी उन युवकों से उलझने की हिम्मत न हुई। अगले गाँव में जब बस पहुँची तो कुछ ग्रामीणों द्वारा बस को रोका गया। कंडक्टर के पूछने पर ग्रामीणों ने बताया कि बस को दुर्गा पूजा के लिए चंदे इकट्ठे करने के लिए रोका गया है। कंडक्टर ने ग्यारह रुपये बढ़ा दिए। इस पर ग्रामीणों ने तुनकते हुए कहा, "ये क्या है, इस बार इससे काम नहीं चलेगा, महँगाई बढ़ गई है, एक सौ एक रुपये दो।" कंडक्टर ने दुःखी मन से अपने बैग से एक सौ एक रुपये निकाल कर चंदे के लिए पैसे दे दिए और मन ही मन सोच रहा था कि महँगाई सिर्फ इनके लिए बढ़ी है या हमारे लिए भी.....।

{ जिंदगी का पड़ाव }



श्रीमती बबीता दास

पति- श्री दीपक कुमार दास, वरि. ले.प. अधिकारी

जब तक चलेगी जिंदगी की सांसे,
 कहीं प्यार कहीं टकराव मिलेगा ।
 कहीं बनेंगे संबंध अंतर्मन से तो,
 कहीं आत्मीयता का अभाव मिलेगा ।
 कहीं मिलेगी जिंदगी से प्रशंसा तो,
 कहीं नाराजगियों का बहाव मिलेगा ।
 कहीं मिलेगी सच्चे मन से दुआ तो,
 कहीं भावनाओं से दुर्भाव मिलेगा ।
 कहीं बनेंगे पराए रिश्ते भी अपने तो,
 कहीं अपनों से ही खिंचाव मिलेगा ।
 कहीं होगी खुशामदे चेहरे पर तो,
 कहीं पीठ पर बुराई का घाव मिलेगा ।
 तू चलाचल रही अपने कर्मपथ पे,
 जैसा तेरा भाव वैसा प्रभाव मिलेगा ।
 रख स्वभाव में शुद्धता का स्पर्श तू,
 अवश्य जिंदगी का पड़ाव मिलेगा ।
 अपनी मुस्कान सदैव बनाए रखना,
 तुम्हें वह सम्मान मिलेगा॥

{ विस्थापन: झारखंड की एक बड़ी समस्या }



श्रीमती सुष्मिता कुमारी

पति-श्री हरि मोहन कुमार, लेखापरीक्षक

झारखंड राज्य को अस्तित्व में आए कई वर्ष हो चुके हैं। इन वर्षों में राज्य ने काफी प्रगति की है। झारखंड राज्य को अपने खनिज संपदाओं के लिए देश में ख्याति प्राप्त है। देश का लगभग 40% खनिज अकेले झारखंड के पास है। परंतु यह वरदान साबित होने के साथ-साथ इस राज्य के मूलनिवासियों के बादहाली के कारणों में से एक है। खनिज संपदा होने के कारण इसका खनन होना प्रारंभ हुआ और विभिन्न कल-कारखाने लगे। यह सब राज्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण भी है। परंतु इस सीढ़ी में मूलनिवासी जिनकी जमीन यहाँ सदियों से है जोकि एक बड़े पैमाने में हाथ से निकलती जा रही है। यह जमीन उनके जीविका का मूल साधन है इसलिए उनका वहाँ से विस्थापन एक बड़ी समस्या बन गई है।

राज्य में अद्यतन रिपोर्टों के अनुसार 65.50 लाख लोग विकास के नाम पर विस्थापित हो चुके हैं। खनिजों के उत्खनन से, कल कारखानों की स्थापना से, सिंचाई परियोजनाओं में, वन्य जीव संरक्षण अभियान एवं अन्य मामलों में कई लोग बेघर हो चुके हैं। हजारों एकड़ जमीन विकास के नाम पर लोगों की चली गई। परंतु इस औद्योगिक विकास का आर्थिक लाभ आदिवासियों को जो कि यहाँ के मूल निवासियों में से एक हैं उनको नहीं मिला और धीरे-धीरे उनकी जनसंख्या अनुपात भी घट गई। स्थानीय जनजाति एवं गैर जनजातियों के विरोध का मुख्य कारण उनके हजारों एकड़ जमीन को विकास के नाम पर अधिकृत किया जाना तथा उचित मुआवजा एवं पुनर्वास की व्यवस्था नहीं करना है।

आतः औद्योगिकरण की प्रक्रिया में आवश्यक है कि स्थानीय लोगों के हितों की रक्षा की जाए। जहाँ तक संभव हो न्यूनतम विस्थापन के विकल्पों को सोचा जाए। प्रभावित परिवारों को बेहतर जीवन स्तर उपलब्ध कराने तथा सतत रूप से आय मुहैया कराने हेतु संयुक्त प्रयास किया जाए।

{ मेरी माँ }

मेरी माँ ऐसी होती है!
 अलार्म क्लॉक होकर मुझे सुबह जगाती है
 खाना बनाते समय वह Chef बनकर मेरे लिए स्वादिष्ट खाना बनाती है
 मेरी माँ ऐसी होती है।
 तबीयत खराब होने से वह नर्स बन जाती है
 पढ़ाने के समय टीचर बन जाती है
 मेरी माँ ऐसी होती है।
 दुख के समय वह मेरे पास खड़ी होती है
 साइकिल से गिर जाती हूँ तो मुझे साहस दिलाती है
 मेरी माँ ऐसी होती है।
 जीने की कला वह मुझे सिखाती है
 और गलती करने से वह मुझे डांट भी देती है
 मेरी माँ ऐसी होती है।
 मेरी माँ मेरे सुख से खुश हो जाती है
 और मेरे दुख से दुखी हो जाती है
 मेरी माँ ऐसी ही होती है।
 जब वह मुझे डांटती है, तब बड़ा गुस्सा आता
 बाद में समझ में आता कि वह डांट जरूरत था
 मेरी माँ ऐसी ही होती है।
 एक दिन मैंने पूछा माँ से बड़ा होकर मैं क्या बनूँ?
 तब वह मुझे मुस्कुरा कर बोली, पहले एक अच्छा इंसान बनो।
 मेरी माँ ऐसी होती है!
 मेरी माँ ऐसी होती है।

सुश्री इप्सिता साहु

पिता- श्री महेश्वर साहु, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

{ दान का महत्त्व }

एक बहुत प्रसिद्ध संत थे जिन्होंने समाज कल्याण के लिए एक मिशन शुरू किया। जिसे आगे बढ़ाने के लिए उन्हें तन, मन, धन तीनों की ही आवश्यकता थी। इस कार्य में उनके शिष्यों ने तन-मन से भाग लिया और इन कार्यकर्ताओं ने धन के लिए दानियों को खोजना शुरू किया।

एक दिन, उनका एक शिष्य कलकत्ता पहुँचा। जहाँ उसने एक दानी सत्यवीर सेठ का नाम सुना। यह जान कर उस शिष्य ने सोचा कि इन्हें गुरुजी से मिलवाना उचित होगा, हो सकता है कि यह हमारे समाज कल्याण के कार्य में दान दे।

इस कारण शिष्य सेठ जी को गुरु जी से मिलवाने ले गए। गुरुजी से मिल कर सेठ जी ने कहा – हे महंत जी आपके इस समाज कल्याण में, मैं अपना योगदान देना चाहता हूँ पर मेरी एक मंशा है जो आपको स्वीकार करनी होगी। आपके इस कार्य के लिए मैं भवन निर्माण करवाना चाहता हूँ और प्रत्येक कमरे के आगे मैं अपने परिजनों का नाम लिखवाना चाहता हूँ। इस हेतु मैं दान की राशि एवं नामों की सूची संग लाया हूँ और यह कह कर सेठ जी अपना दान गुरु जी के सामने रखते हैं।

गुरु जी थोड़े तीखे स्वर में दान वापस लौटा देते हैं और अपने शिष्य को डाँटते हुए कहते हैं कि हे अज्ञानी! तुम किसे साथ ले आये हो, ये तो अपनों के नाम का कब्रिस्तान बनाना चाहते हैं। इन्हें तो दान और मेरे मिशन दोनों का ही महत्व समझ नहीं आया।

यह देख सेठ जी हैरान थे, क्योंकि उन्हें इस तरह से दान लौटा देने वाले संत नहीं मिले थे। इस घटना से सेठ जी को दान का महत्व समझ आया। कुछ दिनों बाद आश्रम आकार उन्होंने श्रद्धा पूर्वक हवन किया और निस्वार्थ भाव दान किया तब उन्हें जो आंतरिक सुख प्राप्त हुआ वो कभी पहले किसी भी दान से नहीं हुआ था।

कहानी से शिक्षा

दान का स्वरूप दिखावा नहीं होता जब तक निःस्वार्थ भाव से दान नहीं दिया जाता तब तक वह स्वीकार्य नहीं होता और दानी को आत्म शांति की अनुभव नहीं होती। किसी की मदद करके भूल जाना ही दानी की असली पहचान है।

श्रीमती अनिशा कुमारी

पति:- श्री राजु कुमार, आ०प्र०प्र० “बी”

{ गुब्बारों के संग }

एक समय की बात है जब एक लड़का अपने माता-पिता के साथ मेले में घूमने गया था। वहाँ उसे मिठाइयों की दुकान भी दिखी, कुछ खिलौने भी दिखे। उसको तो गुब्बारे लेने थे, पर गुब्बारे दिख नहीं रहे थे। थोड़ा आगे चलने पर उसे गुब्बारा वाला दिखा। यह देखते ही वह खुश हुआ और वहाँ चला गया। गुब्बारे वाले से उससे कहा, “अंकल वह लाल रंग वाला गुब्बारा उड़ेगा न!” गुब्बारे वाले ने कहा, “हाँ ले लो।” लड़का उसके पास फिर आया और बोला, “अंकल वह गुलाबी रंग का गुब्बारा उड़ेगा न!” गुब्बारे वाले ने कहा, “हाँ ले लो।” लड़का उसके पास फिर आया और बोला, “अंकल वह पीला वाला गुब्बारा उड़ेगा न!” गुब्बारे वाले ने बोला, “बेटा रंग से कुछ नहीं होगा। उसमें हवा भरने से तो वह उड़ेगा! अगर वह पानी से भरा होता तो वह उड़ता नहीं न। वैसे ही रंग से कुछ तो कुछ भी नहीं होगा। हवा भरने से ही तो वह उड़ेगा लो जो रंग का लेना है ले लो।” सब में हवा भरे हैं। लड़का बोला- ठीक है अंकल ठीक है अंकल।

सीख- बाहर से कोई कितना भी असुंदर हो परंतु अगर वह अंदर से सुंदर हो तो वह सुंदर है। असुंदर नहीं!

सुश्री श्रद्धा राउत
पिता-श्री पूर्ण चंद राउत

{ भलाई }

गप्पू और चप्पू दो भाई थे। दोनों खूब खेलते, पढ़ाई करते और कभी-कभी खूब लड़ाई भी करते थे। एक दिन दोनों अपने घर के पीछे खेल रहे थे। वहाँ एक कमरे में बिल्ली के दो छोटे-छोटे बच्चे दिखाई दिए। बच्चे बिल्ली की माँ कहीं गई हुई थी। दोनों ने बिल्ली के बच्चे की आवाज सुनी और अपने दादाजी को बुला कर लाए। दादाजी ने देखा दोनों बिल्ली के बच्चे भूखे थे। दादाजी ने उन दोनों बिल्ली के बच्चों को खाना खिलाया और एक कटोरी दूध भी पिलाई। अब बिल्ली के बच्चों की भूख शांत हो गई और दोनों आपस में खेलने लगे। इसे देखकर गप्पू और चप्पू बोले बिल्ली की जान बच गई। दादाजी ने गप्पू और चप्पू को शाबासी दी।

नैतिक शिक्षा- दूसरों की भलाई करने से खुशी मिलती है।

सुश्री शुभस्मिता नायक
पिता- श्री बुद्धनाथ नायक

ज़िंदगी



श्री बिमल टोपनो

वरि. लेखापरीक्षक

कभी हँसाए, कभी रुलाए, मुझे इतना सताती है ज़िंदगी
 आखिर मेरे समझ से परे है ये ज़िंदगी
 हंसते हुए हमको कभी रुला देती है ज़िंदगी ।
 जीने को लाख तमन्ना है अपने दिल में
 पर मौत से भी मिला देती है ज़िंदगी ।
 हर शर्म के परदे को उठा देती है ज़िंदगी
 हर झूठ को अब सच बना देती है ज़िंदगी ।
 एक ही चमन में साथ साथ रहने पर भी
 इंसान को इंसान से लड़ा देती है ज़िंदगी ।

विचार

क्रोध का अपना पूरा खानदान है। क्रोध की एक लाडली बहन है, 'नींद'। वह हमेशा क्रोध के साथ-साथ रहती है। क्रोध की पत्नी है 'हिंसा', वह पीछे-पीछे चलती रहती है। लेकिन कभी-कभी आवाज सुनकर बाहर आ जाती है। क्रोध के बड़े भाई का नाम है 'अहंकार'। क्रोध का बाप भी है जिससे वह डरता है, उसका नाम है 'भय'। निंदा और चुगली क्रोध की बेटियां हैं। एक मुँह के साथ खानदान नकचढ़ी बहू है। इस परिवार में पोती है - 'घृणा' ! घृणा हमेशा नाक के पास रहती है। जो नाक-भौं सिकोड़ने का काम करती है। इसकी उपेक्षा क्रोध की माँ है।

सुश्री स्वस्तिक षड़ंगी

पिता- श्री अजय कुमार षड़ंगी

{ दो दोस्त }

दो बहुत अच्छे दोस्त थे, आयुष और मोहन। दोनों ने अपनी 12वीं तक की पढ़ाई साथ में की थी, मगर मोहन के पास आगे पढ़ने के लिए पैसे नहीं थे, तो उसने अपनी आगे की पढ़ाई नहीं की। मोहन गरीब था और आयुष अच्छे-खासे परिवार से था, तो उसने अपने आगे की पढ़ाई जारी रखी। 12वीं में ही उन दोनों को एक लड़की से प्यार हो जाता है, उसका नाम विभा था। विभा भी मोहन से प्यार करती थी, इसलिए अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने शादी कर ली और घर बसा लिया। मोहन के साथ उसकी माँ भी रहती थी।



कुछ वक्त बिता, मोहन के दो बच्चे हो चुके थे। गरीब तो था ही और जैसे-जैसे बच्चे बड़े हो रहे थे, उसकी आर्थिक स्थिति बिगड़ती जा रही थी। अपने घर का खर्च निकाल पाना उसके लिए बहुत मुश्किल होता जा रहा था। तब वह काम ढूँढने निकला और उसे जहाजों में निर्यात का काम मिला। उसमें 6 माह तक सफर करना पड़ता था और बाकी कामों की तरह वेतन काम पूरा होने के बाद मिलता था। तो मोहन काम के लिए निकल पड़ा। मगर रास्ते में ही जहाज में दुर्घटना हो गई। कई सारे लोग मर गए। बहुत कम ही लोग जिंदा बच पाए और उसमें से मोहन भी था। किसी तरह लकड़ी के पट्टे के सहारे वह पास के एक टापू पर पहुँचा। वह वहाँ किसी तरह कच्ची मछलियों को खाकर जिंदा रह रहा था।

मोहन की कोई खबर ना मिलने के कारण उसके परिवार वाले बेहद चिंतित थे। कई साल बीत गए, उसके परिवार वाले उसकी राह देखते रहे, मगर वह नहीं आया। उनकी स्थिति तो ऐसे ही खराब थी और मोहन के ना रहने के कारण और भी खराब होती जा रही थी। मोहन की माँ से उसके बहु और पोतों की हालत देखी ना जा रही थी। तो वह अपने बहु को मोहन के दोस्त आयुष से शादी कर लेने को बोलती है। पहले तो विभा मना कर देती है लेकिन अब बात उसकी बच्चों पे आ गई थी तो वह शादी के लिए मान जाती है। आयुष तो विभा से प्यार करता ही था तो उसने भी खुशी-खुशी शादी कर ली। आयुष के पास नौकरी थी तो उसकी स्थिति सुधर गई। वे सब बहुत खुशी-खुशी रह रहे थे और अपनी जिंदगी में काफी आगे बढ़ चुके थे।

सब एकदम ठीक चल रहा था। मोहन किसी तरह उस टापू से बाहर निकल जाता है और सात साल बाद अपने घर लौटता है। मोहन देखता है कि उसका घर टूट चुका है और वहाँ कोई नहीं है। तो वह अपने दोस्त के घर जाता है वहाँ वह देखता है कि आयुष, विभा और उसके बच्चे बगीचे में खेल रहे थे। वह बहुत कमजोर हो चुका था, उसकी दाढ़ी और बाल भी बहुत लंबे हो चुके थे, पहले से और भी पतला हो चुका था और एक फटा चादर ओढ़ कर आया था। उन लोगों को देखते-देखते मोहन को चक्कर आ जाता है और वह गिर जाता है। और ये सब देख कर उसे तेज बुखार भी आ जाता है।

मोहन की माँ वहीं से गुजर रही थी और वह बहुत दयालु भी थी। मोहन की वेशभूषा अलग होने के कारण वह मोहन को पहचान नहीं पाती है, इसलिए वह उसे घर के अंदर ले जाती है। जब उसकी माँ उसके सर पर पट्टी दे रही था तो वह सोचता है कि जब उन दोनों में बात होगी तो, बात-बात में उसकी माँ उसे अपने बेटे के बारे में बताएगी तो वह उन्हें खुशखबरी देगा कि उनका बेटा अभी जिंदा है और उन्हीं के सामने बैठा है। इसी बीच वह अपनी माँ को खुशखबरी देने की सोची। वह अपनी माँ से पूछता है, "अच्छा माँ जी! आप तो अपने बेटे से इतना प्यार करती है, तो क्या आप नहीं चाहती कि वह लौट आए।" तब उसकी माँ बोलती है कि "जब मैं चाहती थी तब वह नहीं लौटा, अगर वह जिंदा भी है तो या तो वह ना लौटे या फिर मर जाए, क्योंकि अगर अब वह आता है तो यहां उसका कुछ नहीं रहा और वह येसब सहन नहीं कर पाएगा।" मोहन को एक जोर का झटका लगता है और वह सोचते-सोचते कि अब वो जीना चाहता है तो बाकी नहीं चाहते कि वह जिंदा रहे और वो मर जाता है। मोहन की पहचान हमेशा के लिए एक रहस्य रह जाती है।

पुरुषोत्तम किशोर

पिता- श्री जे. किशोर, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

{ कितना बेबस है इंसान }



श्री मानस रंजन जेना

लेखापरीक्षक

कितना खामोश है ये शहर
हर दिल में एक सनसनी
हर चेहरे पर है कहर

बचपन बिखरी हुई है यहाँ
दांव पर लगी है मासूमियत
सँवरना छोड़, खुद को संभालना है मुश्किल
जरूरतों की ढेर पर बैठा हँस रहा है शिकायत

धुँधला है आसमां और धुआँ-धुआँ है श्मशान
सुनी सड़कों से आती है बस एंबुलेंस की सायरन
अपरिचित बन रहे हैं अपने और कोई बेबसी में अनजान
कितना बेबस है इंसान !

यादें

सितम यूँ भी सनम खुद पर कभी ढाया नहीं करते
किसी के इश्क में खुद को कभी ज़ाया नहीं करते

वफ़ा की आरज़ू हो बस ज़रूरी क्या वफ़ा होना
किसी की याद में दिल को यूँ बहलाया नहीं करते

किसी की आस को लेकर भला कब तक जिए कोई
कि अपनी जिन्दगी में रंज फैलाया नहीं करते

हमें भी आपके जैसा मिलेगा फिर कभी कोई
हमें अब ख्वाब भी ऐसे कभी आया नहीं करते

बड़े नादान हो तुम समझते ही नहीं इतना
किसी की आरज़ू में दिल को तरसाया नहीं करते।।

श्री धनंजय किसान

पत्नी- श्रीमती भानुमती किसान, वरि. लेखापरीक्षक

{ एक भारत श्रेष्ठ भारत }



श्री हरि मोहन कुमार

लेखापरीक्षक

भारत देश राज्यों का एक ऐसा समूह है जो अलग-अलग भाषाएं, धर्म, जाति, परंपराएँ को अपने में समेटती है। यहाँ एक राज्य दूसरे राज्य से बिल्कुल भिन्न है चाहे वह लोगों के रहन-सहन को देखें, बोली को देखें, खानपान को देखें या फिर भौगोलिक संरचना को देखें। कोई राज्य विशालकाय पहाड़ से गिरा है, तो कोई नदियों की तलहटी में बसा है, तो कोई उफनती समुद्री किनारों पर, कोई गर्म रेगिस्तान से या कोई चट्टानों एवं पहाड़ियों पर बसा है। यह भौगोलिक अवस्थाएँ लोगों के अलग-अलग रहन-सहन के कारणों में से एक है। सभी अपने स्तर की चुनौतियों से जूझ कर जिंदगी गुजर बसर कर रहे हैं, जैसे- बाढ़, तूफान, भूकंप आदि। परंतु उनकी अस्मिताएँ ही उन्हें विशेष बनाती हैं। उनका खान-पान पहनावा आदि पर्यावरण के अनुकूल रहता है।

इतनी भिन्नता को एक धागे में पिरोते हुए हम एक देश के वासी हैं। ऐसा मानना और एकजुट होकर रहना ही हमें श्रेष्ठ बनाता है। देश शब्द का मूल सिद्धांत ही यह है कि हम एकता की विचारधारा में विश्वास रखते हैं। देश कोई व्यवस्था या शासकीय ढाँचा नहीं है जिसे हम कुछ नीति-नियमों से श्रेष्ठ या सर्वोत्तम बना सकते हैं। जो नियम-कानून देश में बनते हैं उसकी व्यापक स्वीकार्यता ही क्रियान्वयन का आधार है। अगर कानूनों का विरोध किसी समूह विशेष, राज्य विशेष द्वारा होने लगे तो उसके कार्यान्वित होने की संभावना नहीं रह जाती है। उसकी स्वीकार्यता ही हमारी एकजुटता का प्रमाण है और यही देश के प्रति हमारी सद्भावना को दर्शाता है। बिना इस भावना या प्रेम के एक अखंड देश की कल्पना करना चुनौती है। परंतु हमने शुरुआत से ही और विशेषकर आजादी के उपरांत एक समृद्ध देश की कल्पना अंतर्निहित कर लिया है जो हमें सशक्त बनाता है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग पहचान दिलाता है।

{ कोरोना का चक्रव्यूह }



श्री दिगम्बर पंडा

लिपिक

तड़पाया है बहुत हम इंसानों ने,
 प्रकृति माता को,
 अब है हमारी बारी,
 दर्द पड़ेगा हमें सहना
 करके कोरोना से जंग जारी
 कोरोना महामारी ने दानव का रूप साजा,
 इसका आतंक का बजा रहे हैं बाजा।
 इतनी ताकत है इसमें
 बैठा दिया घर पर हमें,
 लॉकडाउन बना है हमारा वनवास,
 उसी के कारण कई हैं उपवास।
 शटडाउन हो गया है हमारे आतंक का लगाम
 और प्रकृति को मिला आराम,
 चाहे जितना भयंकर हो कोरोना
 लेकिन हो गया है बंद प्रदूषण
 खुश है पशु-पक्षी और वनस्पति गण
 परेशानियां आयेगीं अनेक
 सोशल डिस्टेंसिंग बनाकर
 करना है मन की दृढ़ता को एक

मास्क पहनकर छुपाएँ अपना मुख
 इस समय का उपयोग करो और पाओ परिवार का सुख
 माना बंद हुआ सब का कारोबार और काम
 इसके बदले सीखो कुछ नया हर शाम
 सब को छोड़ना पड़ा ऑफलाइन की ड्यूटी
 और बनाना पड़ा ऑनलाइन से अपनी जोड़ी
 बहुत कुछ खोया बहुतों ने
 किसी ने अपनी नौकरी
 तो किसी ने अनाज की टोकरी
 खोया है हमने हमारे अपने
 किसी ने माता तो किसी ने पिता
 किसी ने बच्चे तो कई लोग जो थे अच्छे।
 अपनों को खोने का कोई नहीं कर सकता भरपाई,
 शायद स्वयं भगवान भी नहीं
 पर आशा की किरण को देखते हुए
 हमें जारी रखना है कड़ाई
 राह में है एक चक्रव्यू मुश्किल
 हमें जीतने के लिए करना होगा
 अभिमन्यु जैसा पराक्रम शामिल।

{ एक मुस्कान लिए फिरता हूँ }



श्री सिंगराई मुर्मू
आशुलिपिक

क्या है दशा मेरी किन हालातों से गुजरा हूँ
तू पथिक क्या जानेगा कितना उजड़ा हूँ
उनके सवालों में घुले व्यंग्य लिए फिरता हूँ।
चेहरे पर एक मुस्कान लिए फिरता हूँ।

कुछ ने किया सम्मान कुछ ने तिरस्कार किया,
कुछ ने दिया सहारा कुछ ने आघात किया,
जीवन के हर पहलू को याद किये फिरता हूँ
चेहरे पर एक मुस्कान लिए फिरता हूँ।

कई बार डरा कई बार रुका बस मुड़ा नहीं
माँगे सुख जो मिले भी है कभी उड़ा नहीं
धैर्य और परिश्रम का गुणगान किए फिरता हूँ
चेहरे पर एक मुस्कान लिए फिरता हूँ।

लाख मिली विफलताएं आखिर सीखा भी उनसे ही है
भूलों को गले लगाया खुद को सींचा भी उनसे ही है
आज भी एक डर साथ लिए फिरता हूँ
चेहरे पर एक मुस्कान लिए फिरता हूँ।

{ पुरी में रथ यात्रा }

रथ यात्रा त्योहार को रथ के त्योहार के रूप में भी जाना जाता है, जो भारत में हर साल लोगों द्वारा बहुत उत्साह, खुशी और खुशी के साथ मनाई जाती है। यह त्योहार पूरी तरह से हिंदू भगवान जगन्नाथ देव को समर्पित है और विशेष रूप से भारत के उड़ीसा राज्य के पुरी में मनाया जाता है। यह प्रतिवर्ष आषाढ़ महीने में आयोजित किया जाता है।

भगवान जगन्नाथ हिंदू देवता हैं, जिनका अवतार द्वापर युग में पृथ्वी पर भगवान कृष्ण के रूप में हुआ था। ऐसा माना जाता है कि वामन अवतार का अर्थ है कि भगवान विष्णु का बौना रूप भगवान जगन्नाथ का अवतार था। इस उत्सव में भगवान् जगन्नाथ की मूर्ति को लकड़ी के बने एक भव्य और सुसज्जित रथ में रखते हैं। उनके साथ उनके बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा की मूर्ति भी होती हैं। रथ बड़े समारोहपूर्वक नगर के प्रमुख बाजारों से गुजरता है। यद्यपि रथ को खींचने वाले लकड़ी के घोड़े भी रथ में लगे होते हैं, लेकिन श्रद्धालुजन रस्सी के सहारे इसे खींचना बड़ा पुण्य का काम मानते हैं।

पुरी में रथ-यात्रा उत्सव सबसे शानदार ढंग से मनाया जाता है। देशभर से हजारों श्रद्धालु भक्त इस उत्सव में भाग लेने के लिए पुरी आते हैं। इस अवसर पर पुरी में इतनी भीड़ हो जाती है कि इसे संसार के सबसे बड़े उत्सवों में गिना जाता है। पुरी का रथ बड़ा भव्य है। यह देखते ही बनता है।

रथ यात्रा का जुलूस देखने सड़क के दोनों ओर पुरे मार्ग पर लोगों की भारी भीड़ दिखाई देती है। सभी लोग रथ में स्थित भगवान् की मूर्ति के दर्शन करना और प्रसाद प्राप्त करना चाहते हैं। रथ के सामने आने पर अनेक लोग रस्सी पकड़कर कुछ देर रथ खींच कर अपने को धन्य मानते हैं। समूचे रास्तेभर रथ पर फूलों की वर्षा होती रहती है।

पुरी के जगन्नाथ मंदिर का रथ दर्शनीय है। यह प्राचीन वास्तुकला का अनुपम नमूना है। इस अवसर पर पूरे भारत और विदेशों में पवित्र त्योहार का जश्र विभिन्न टीवी चैनलों पर सीधा प्रसारित होता है।

श्री निरुपम कर्मकार

लेखापरीक्षक

{ नारी }



श्रीमती भवानी मुर्मू
पति-श्री सिंगराई मुर्मू, आशुलिपिक

नारी है अभिमान धरा का,
दो उनको सम्मान जरा सा ।
नारी तो है पूर्ण समर्पण,
कर देती सर्वस्व अर्पण ।
कुछ तो उनमें निश्वास भरो,
कुछ तो उन पर विश्वास करो ।
नारी तो है श्रोत सुधा की,
अनमोल रत्न हैं इस वसुधा की ।
निश्छल प्रेम बरसाने वाली,
व्यथित मन हर्षानि वाली ।
नारी है तो, नई जिंदगी है,
बस कुछ नहीं, बंदगी है।

वो निर्झर झरने सी बहती,
वो कल-कल कलरव भी करती,
हर गम को मन ही मन सहती,
कभी किसी से कुछ न कहती।
हे नर! उनका सम्मान करो
निज हाथों से यह काम करो
दो पुष्प न अर्पित करो मगर
अस्मिता उनकी रह जाएं अगर
तो भी उनका सम्मान रहेगा,
उन पर तेरा एहसान रहेगा।
उनको खुद पर अभिमान रहेगा,
जग में उनकी पहचान रहेगा।

{ कार्य का महत्व }

शैलजा अब वयस्क अवस्था में आ चुकी थी तथा अपनी व्यवसायिक पढ़ाई को आरंभ करके कोई नौकरी करने की सोच रही थी। उसके मन में बहुत से भाव थे तथा वह ऐसा कार्य चुनना चाहती थी जो कि बहुत ही अच्छा हो तथा जिससे उसका बहुत ही प्रभाव बने। वह जहाँ भी जाती यह देखा करती थी कि कोई भी किसी भी कार्य में रत है तो वह कैसा व्यवहार करता या करती है तथा क्या वह अपने कार्य से प्रसन्न व संतुष्ट है या नहीं। उसको लगता था कि अच्छा पद पाने वाले ही प्रसन्न होते हैं, समान कार्यपद वाले अधिकतर अप्रसन्न ही रहते हैं।

एक बार वह अपने चाचा जी के साथ बेंगलुरु नगर घूमने गईं उसे घूमना बहुत अच्छा लगता था क्योंकि उसका मानना था कि यात्रा से मनुष्य को जीवन की कठिनाइयों का ज्ञान होता है तथा जीवन के विभिन्न अंगों से भी सामना होता है। तथा भारत जैसे विविधता से भरपूर देश में तो यात्रा बहुत ही ज्ञानवर्धक तथा अनुभव देने वाली होती है।

बेंगलुरु में शैलजा ने बहुत स्थानों का भ्रमण किया जिसमें चिड़ियाघर, कुछ पुरानी इमारतें तथा पार्क भी सम्मिलित थे। वापस आते समय उसके चाचा जी उसे विमानपत्तन के प्रतीक्षालय (लॉज) में लेकर गए। उनके पास एक बैंक का क्रेडिट कार्ड था जिस पर प्रतीक्षालय में निःशुल्क जाने की सुविधा थी। उसे प्रतिक्षालय में जा कर बहुत अच्छा लगा। उसने देखा कैसे बहुत से लोग वहाँ पर अपने कंप्यूटरों पर काम कर रहे थे तथा विभिन्न प्रकार का खाना खा रहे थे।

उसे वह वातावरण बहुत ही अच्छा लग रहा था। वह सोच रही थी कि क्यों ना वह विमानपत्तन पर ही कोई नौकरी क्यों ना कर ले! सभी जगह पर सफाई है और लोग बहुत ही सभ्य दिखते हैं।

थोड़ी देर बाद वह शौचालय का प्रयोग करने गईं। उसने देखा कि वहाँ पर एक सफाई कर्मचारी है जो ध्यान रख रही थी कि कोई अस्थान गंदा ना हो, पानी सही ढंग से नलों में आ रहा हो, तथा यदि किसी को कोई सहायता चाहिए तो वह तुरंत उसे पूरा कर रही थी। शैलजा ने यह भी देखा कि वह स्त्री ऐसे स्थान पर काम करके भी स्मित भाव से बात कर रही थी जहाँ पर प्रत्येक क्षण उसे दुर्गंध तथा मल का ही सामना करना पड़ता था।

इस बात का शैलजा के मन पर बहुत प्रभाव पड़ा। उसने आकर अपने चाचा को सारी बात बताई। तो उसके चाचा ने कहा कि इस घटना का अर्थ यही है कि कार्य में प्रसन्नता नहीं होती, प्रसन्नता का मूल तो किसी भी व्यक्ति के मन में होता है। कार्य कोई भी हो यदि आप उसे मन से करेंगे तो आप प्रसन्न रहेंगे अन्यथा बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो उच्च पदों पर काम करते हुए भी निराश रहते हैं तथा उस पद का आनंद नहीं ले पाते।

सुश्री स्वागतिका साहू

पिता- श्री गणेश्वर साहू, लेखापरीक्षक

विरह



श्रीमती भानुमति किसान
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

साथ गुजारी सारी कहानी याद रहीं
तुम न रहे पर सारी बातें याद रहीं ।
मेरे आँसू पीना अपनी आँखों से
सूखी सूखी सब बरसातें याद रहीं ।
रूठने पर अब मुझे कौन मनाएगा
वो रूठना मनाना सब याद रहीं।
मेरे अपने शौक अब तुम्हारे नहीं रहे
तुम्हारी ख्वाइशें पूरी करना याद रहीं।
हरा भरा सावन आकर चला जाता है
पर बाग के झूले आज भी याद रहीं।
बसंती हवा खुशी से झूमने लगे हैं
पर तुम्हारा इठलाना याद रहीं ।
सारे शिकवे दिल में दबकर दर्द हुए

दर्द रहा तो सारी घातें याद रहीं ।
आवों-हवा ने अपनी दिशा बदल ली है
सर्दी के ठंडे झोंके बस याद रहीं।
बिना मतलब के लोग पूछते भी नहीं
तुम्हारी परवाह करना सिर्फ याद रहीं।
गम में डूबे रहना अच्छे लगने लगे हैं
खुशी के वो पल सिर्फ याद रहीं।
हम दोनों ने छोड़ दिया सबकुछ अपना
दुनियां को बस जातें-पातें याद रहीं ।
दुनिया हमेशा दूसरों की बात करती है
पर उनसब में तुम्हारी बातें याद रहीं।
उन्हें भानु क्या खाक वफ़ा सिखलाएगी
जिनको केवल शह औ मातें याद रहीं॥

{ टोक्यो ओलंपिक में भारत }



श्रीमती नीतु चंद्रा

पति- श्री विभास चन्द्र, सहा. ले.प. अधिकारी

प्रत्येक बार की तरह इस बार भी लोगों को टोक्यो जा रहे हैं भारतीय खिलाड़ियों से बहुत आशाएँ थी। कहा जा रहा था कि इस बार ओलंपिक में भेजी जा रही टीम भारत की अब तक की सर्वश्रेष्ठ टीम है और यह ओलंपिक भारत के लिए लंदन ओलंपिक से भी बेहतर होने वाला है। लेकिन प्रतियोगिता के आखिरी चरण तक आते-आते यह साबित हो गया कि भारतीय खेल संस्थाओं को अभी बहुत कुछ करना है। जहाँ और देशों के अच्छे रैंक वाले खिलाड़ी अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप प्रदर्शन कर रहे हैं वहीं भारत के खिलाड़ी जो विश्व में एक से पांच तक रैंकिंग रखते हैं वह भी ओलंपिक में अपने प्रदर्शन को नहीं दोहरा पा रहे हैं वरना कोई वजह नहीं कि भारत को एक ही स्वर्ण पदक मिला होता। इससे साफ होता है कि भारतीय खिलाड़ियों के मानसिक मजबूती पर भी काम करने की जरूरत है।



भारत और उसके पड़ोसी देश चीन में बहुत कुछ समानताएँ हैं। दोनों देशों की जनसंख्या 130 करोड़ से ज्यादा है और दोनों देश दुनिया की तेजी से उभरती अर्थव्यवस्थाएँ हैं। कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ भारत चीन को कड़ी प्रतिस्पर्धा दे रहा है लेकिन खेल में जहाँ चीन टॉप तीन देशों में शुमार होता है भारत नीचे से तीन चार देशों में ही जगह बना पाता है। लोग और मीडिया ओलंपिक के समय खूब चीखते चिल्लाते हैं, भारतीय खिलाड़ियों की आलोचना करते हैं और उसके बाद फिर चार साल के लिए सो जाते हैं। इस तरह तो भारत का ओलंपिक में प्रदर्शन नहीं सुधरेगा।

विफलता का एक गंभीर विश्लेषण कर सही दिशा में त्वरित कदम उठाए जाने की जरूरत है। सबसे पहले देश में खेलों के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने की जरूरत है। अगर लोगों को लगेगा कि उनके बच्चे के लिए खेल में भी भविष्य है तभी वह अपने बच्चों को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करेंगे। अतः खेल का बजट बढ़ाने की जरूरत है साथ ही साथ खिलाड़ियों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने की जरूरत है। अच्छी ट्रेनिंग, अच्छी सुविधाएँ, अच्छा खान-पान उपलब्ध कराने के अलावा खेल संस्थाओं को मजबूत करने और उसे राजनीतिक हस्तक्षेप से बचाने की जरूरत है। जब तक खिलाड़ी, कोच और संस्थाएं प्रोफेशनल की तरह काम नहीं करेंगे तब तक पदक पाना मुश्किल है। स्कूल और कॉलेजों में खेल को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख खेलों के विश्वविद्यालय खोलने की जरूरत है जहाँ प्रतिभा को तराशा जा सके। आजकल खिलाड़ियों को मनोचिकित्सक की जरूरत पड़ती है ताकि उनका काउंसलिंग हो सके। इन सब पर कार्य करने के अलावा भारत को एक अल्पकालिक और एक दीर्घकालिक रणनीति बनानी होगी। भारत किन खेलों में पदक ला सकता है उन पर विशेष ध्यान देना होगा साथ ही अन्य खेलों में पदक लाने की संभावनाएँ बढ़ाने के लिए काम करना होगा। तब जाकर भारत ओलंपिक में बेहतर कर पाएगा।



खेलों के प्रति लोगों के सोच में भी बदलाव लाना होगा। खेल सिर्फ खेल ही नहीं है। इससे बच्चे कई चीजें सीखते हैं जैसे- कड़ी मेहनत, प्रतिस्पर्धा, अनुशासन, निर्णय लेना, टीम भावना, हार से जल्द उबड़ना, संघर्ष करना, स्वास्थ्य को ठीक रखना, इत्यादि। जीवन के बारे में जितना पढ़ाई सिखाती है उससे थोड़ा भी कम खेल नहीं सिखाती बल्कि ज्यादा ही सिखाती है। पिछले कुछ दशकों में भारत का खेलों के प्रति नजरिया बदला है। लड़के ही नहीं बल्कि लड़कियाँ भी खेलों में उम्दा प्रदर्शन कर रही हैं। उम्मीद है कि भारत ओलंपिक में मजबूती के साथ उभरेगा।

{ मैंने पूछा ! }

मैंने पूछा चाँद से कि देखा है कहीं,
क्या है तुम्हें पता या नहीं,
कौन है जो है हमारे पास,
जो इस अंधेरे को कर दे प्रकाश।

मैंने पूछा नदियों से कि देखा है कहीं,
क्या है तुम्हें पता या नहीं,
कौन है जो है हमारे पास,
जो खुद प्यासा रहकर बुझाए हमारी प्यासा

मैंने पूछा माटी से कि देखा है कहीं,
क्या है तुम्हें पता या नहीं,
कौन है जो है हमारे पास,
जो खुद हल की पीड़ा सह के सींचे घासा

सब चुप रहे कोई कुछ ना कह पाया,
फिर मैं मुस्कुराई और कह दिया।
यह वो है जो है मेरे पास,
और है अति खास,
वह है मेरे माता-पिता,
उनके चरणों में मेरा प्रणाम

सुश्री स्नेहा राउत
पिता-श्री पूर्ण चंद राउत

{ मेड इन इंडिया }

एक जापानी टूरिस्ट इंडिया आया और जैसे ही भारत पहुंचा, टैक्सी वाले उसके पास आ गए। उस जापानी टूरिस्ट ने एक टैक्सी ली और बैठ गया। इंडिया का ट्रैफिक देख कर वह थोड़ा परेशान सा लग रहा था। फिर उसने टैक्सी वाले को जापान की विशेषताएं बताने लगा। वह जापान की बहुत तारीफ करने लगा। जब वह टूरिस्ट टैक्सी में बैठा रास्ते में जा रहा था, तभी एक कार तेज रफ़्तार टैक्सी के वगल से निकली। उस कार को देख कर वह टूरिस्ट चिल्लाया “अरे वो देखो, टोयोटा की कार, मेड इन जापान, वेरी फास्ट”। पांच मिनट के बाद एक और कार उस टैक्सी को पीछे छोड़ती हुई आगे निकली, वो टूरिस्ट फिर चिल्लाया “अरे ये तो निशान की कार थी, ये भी मेड इन जापान है, बहुत तेज रफ़्तार है इसकी, वेरी वेरी फास्ट”। कुछ देर बाद एक और कार उस टैक्सी को पीछे छोड़ती हुई तेज रफ़्तार से निकल गयी और वो टूरिस्ट फिर चिल्लाया “अरे वो देखो मिट्सुबिशी की कार, मेड इन जापान है और बहुत तेज है, वेरी वेरी फास्ट”। टैक्सी ड्राइवर हिंदुस्तानी था और उस जापानी टूरिस्ट का अपने देश की इतनी तारीफ करना उसे अच्छा नहीं लग रहा था। अब उस टैक्सी ड्राइवर को थोड़ा गुस्सा आ रहा था। तभी एक और कार उस टैक्सी को पीछे छोड़ती हुई निकली और टैक्सी में बैठा वो जापानी टूरिस्ट फिर से चिल्लाया “अरे ये तो होंडा की कार है, मेड इन जापान, वेरी वेरी फास्ट”। अब टैक्सी ड्राइवर के सब्र का बाँध टूट गया और उसने अपनी टैक्सी रोकी, अपने टैक्सी मीटर की तरफ इशारा किया और कहा “सर 500 रुपये”। उस जापानी टूरिस्ट ने कहा “अरे अभी तो 15 मिनट भी नहीं हुए, थोड़ी सी देर के 500 रुपये, ये तो बहुत ज़्यादा है”। टैक्सी ड्राइवर थोड़ा मुस्कराया और कहा “सर ये मीटर मेड इन इंडिया है, बहुत तेज, वेरी वेरी फास्ट”।

श्रीमती सुचित्रा कर्मकार

पति-श्री निरुपम कर्मकार, लेखापरीक्षक



{ महत्वपूर्ण वाक्य }



श्री बी. रामचंद्र राव

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कोई भी व्यक्ति तुम्हारे पास तीन कारणों से आता है भाव से, अभाव से, प्रभाव से। अगर वह भाव से आया तो उसे प्रेम दो। अगर अभाव से आया तो उसे मदद करो। अगर प्रभाव से आया तो खुश हो जाओ, क्योंकि ईश्वर ने तुम्हें इतनी शक्ति दी है मैं खुश हूँ कोई मेरा बात तो करता है, बुरा कहता है तो क्या हुआ याद तो करता है।

कौन कहता है नेचर और सिग्नेचर नहीं बदलता बस एक चोट की जरूरत है, साहब जी उंगली पर लगी तो सिग्नेचर बदल जाता है और दिल पर लगी तो नेचर बदल जाता है। सुनने की आदत डालें क्योंकि ताने मारने वालों की कमी नहीं है मुस्कुराने की आदत डालें क्योंकि टांग खींचने वालों की कमी नहीं है प्रोत्साहित करने की आदत डालें क्योंकि हतोत्साहित करने वालों की कमी नहीं है।

सच्चा इंसान ना तो नास्तिक होता है और ना ही आस्तिक होता है। सच्चा इंसान हमेशा वास्तविक होता है छोटी-छोटी बातें दिल में रखने से बड़े-बड़े रिश्ते कमजोर हो जाते हैं कभी अपनी पीठ के पीछे अपनी बारे में सुनो बुरा मत मानना क्योंकि बात उन्हीं की होती है जिनमें कोई बात होती है निंदा हमेशा जिंदा व्यक्ति की होती है मरने के बाद तो सिर्फ तारीफ होती है।

{ सब घूमते हैं ! }



श्री गोबिन्द दीप

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

चन्द्रमा करती परिक्रमा पृथ्वी की
अठाईस दिनों में पूरी कर लेती है,
मगर पृथ्वी सूरज का परिक्रमण को
तीन सौ पैसठ दिन लगाती है।

गतिमान सूर्य 7190 किलोमीटर प्रति घण्टा के गति से,
सत्ताईस दिनों में अपना एक चक्कर है लगाता,
और 828 हजार किलोमीटर प्रति घंटा के गति से
आकाशगंगा का एक परिक्रमण करता।

घूमती पृथ्वी घूमता सूरज है
सब अपना-अपना चक्कर भी लगाते हैं
ज्वारबंध चंद्रमा मगर नहीं घूम पाती
धरती से हम उसका एक पार्श्व ही देख पाते हैं।

सौरपरिवार का इस एक परिक्रमण को,
लगता है साढ़े बाईस करोड़ साल,
आकाशगंगा में इस स्थान पर जब सौरजगत था,
तब पृथ्वी पर दौड़ रहे थे डायनोसोर, था ज़ूरसिक काल।

सोलह सौ किलोमीटर प्रति घंटा के गति से
पृथ्वी अपना चक्कर लगाती है,
पलक झपकाते एक सेकंड में
कक्षपथ पर वह तीस किलोमीटर दौड़ जाती है।

आकाशगंगा भी भाग रहे हैं एक दूसरे से
सारा ब्रम्हांड फैल रहा है,
अन्द्रोमेडा चार लाख किलोमीटर प्रति घंटा की गति से
हमारी आकाशगंगा की ओर बढ़ रहा है।

होती रात दिन पृथ्वी की घूर्णन से
परिक्रमण से ऋतुएँ संभव होता,
एकलौता चंद्रमा करता नियन्त्रित गति पृथ्वी की
जिस से वह सौरजगत में सबसे स्थिर ग्रह है बन पाता।

अनादि है, है अनन्त महाकाश,
यह बहुब्रम्हांड प्रकांड है,
कोई नहीं स्थिर सब घूमते हैं,
घुमक्कड़ सारा ब्रम्हांड है !

काला बादल



श्री निरंजन परिडा
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

उम्मीद जगा कर रखा हूँ
अपने मन के एक कोने में,
एक नया सवेरा फिर होगा
खुशहाली होगी जीवन में।

किलकारी फिर से गूँजेगी
स्कूलों के सुने प्रांगण में,
नुक्कड़ पे फिर चर्चा होगी
खुशियाँ होंगी हर आँगन में।

बच्चों की फिर जिद होगी
आइसक्रीम पार्लर जाने की,
फिर से लाइन लग जायेगी
चाट पकौड़ी खाने की।

जीवन में फिर आपाधापी होगी
करियर का टेंशन होगा,
सैर सपाटा मस्ती भी होगी
आनंद भरा जीवन होगा।

जो अपने हमसे बिछड़ गये
उनका एहसास सदा होगा,
जीवन के इस कटु सत्य को
नियति मान जीना होगा।

होगा फिर एक नव विहान
काला बादल छट जायेगा
मानव उन्मुक्त गगन में फिर
स्वच्छंद जीवन जी पायेगा।

{ कोरोना महामारी 2021 }



श्री कृष्णा कुजूर
संबलपुर

वैज्ञानिकों के अनुसार लगभग सितम्बर 2019 से ही चीन देश के वुहान शहर से कोरोना महामारी की शुरुआत हो चुकी थी और चीन देश के कई शहरों में फैल गयी और वहाँ से ही लोगों के हवाई मार्ग, स्थल मार्ग एवं जल मार्ग से यात्रा करने के दौरान धीरे-धीरे सारी विश्व में फैल गयी। विश्व के तमाम देशों में यह कोरोना महामारी अबतक करोड़ों लोगों की जान ले चुका है और करोड़ों लोगों को इस महामारी से संक्रमित होकर असमय ही काल के गाल में जाना पड़ रहा है। दुनिया का कोई भी ऐसा देश नहीं जो इस महामारी से अछूता रहा हो। सन 2019 से पहले दुनिया सरपट दौड़ रही थी अब कोरोना वायरस महामारी के कारण दुनिया अचानक थम सी गयी, मानो ऐसा लगता है सरपट दौड़ने वाली दुनिया पर विराम चिन्ह लग गया हो।

इस कोरोना के लहर में क्या बड़े क्या छोटे सब लोगों को, सब धर्मावलम्बियों को अपने भयंकर चपेट में ले लिया है, इस महामारी से लड़ने के लिए विश्व के कई देशों के वैज्ञानिकों ने दिन - रात अथक प्रयास करके आज अनेक कोरोना वैक्सीन की खोज की है और बहुत से वैक्सीन और दवाइयों का उत्पादन एवं परिक्षण की जा रही है जिससे कि आने वाले दिनों में इस महामारी से निपटा जा सके। फिलहाल कई देशों ने वैक्सीनेशन आरम्भ कर दिया है जिससे कि इस महामारी के संक्रमण की रोकथाम हो सके। ऐसे ही देशों में सर्वप्रथम इजराएल आगे है जहाँ जिसने अपने नागरिकों के लिए लॉकडाउन भी हटा दी है और मास्क लगाना जरूरी नहीं है।

इस कोरोना महामारी ने अमेरिका, रूस, चीन, भारत और दुनिया के तमाम देशों को भी झकझोर के रख दिया। लाखों की संख्या में इस महामारी से लोग संक्रमित हुए और मरने लगे। ऐसे ही दुनिया के तमाम देशों को भी कोरोना महामारी ने अपने चपेट में ले रखा है।

हमारे देश भारत को भी यह महामारी भयंकर चपेट में ले लिया है। देश के सभी महानगरों एवं सभी छोटे बड़े जिलों को भी बहुत प्रभावित किया है। यह महामारी बहुत ही खतरनाक है सभी गावों कस्बों के लोग इस महामारी से परेशान हुए हैं। किसी को भी नहीं बक्स रही है, क्या अमीर और क्या गरीब सब के सब

इसके मुँह में समां रहे है। कितना तो अपने प्रियजन का अंतिम संस्कार तक नहीं कर पाए। किसी को श्मशान में भी जगह तक नहीं मिली। कितने शवों को जानवरों और चील - कौवे तक ने नोच डाला और कई शव को तो नदियों में बहाई जा रही है कितना हृदयविदारक वीभत्स अमानवीय घटना है। लोग अपने प्रियजनों के शव को चाहकर भी अंतिम संस्कार तक नहीं कर पा रहे हैं। कुछ लोग अपने प्रियजनों को देखना तक भी नहीं चाहते क्योंकि कहीं उनको भी कोरोना न हो जाए।

इस कोरोना काल में कितने लोग अपने प्रियजनों से बिछड़ गये। किसी ने अपने अपने माता-पिता को, तो किसी ने अपने बच्चों को, तो किसी ने अपने दादा-दादी या अन्य को। भारत जैसे विशाल देश में लाखों की संख्या में लोग इस महामारी से मर गए और अभी तक लोग मर रहे है। कोरोना की पहली लहर एवं कोरोना की दूसरी लहर में लाखों लोग असमय ही काल के गाल में समां गए। इस दौरान अस्पतालों में मरीजों के लिए बेड एवं जगह नहीं हो रही थी। कितने लोगों को वक्त रहते उचित इलाज न मिलने के कारण जमीन पर ही अपना दम तोड़ दिया। कितनों को समय पर दवाई और आक्सीजन नहीं मिला जिसकी वजह से लोग मर गए।

इस कोरोना महामारी में लोग तड़पते मर रहे थे। उनके परिजन रो रहे थे फिर भी ऐसे कठिन घड़ी में भी कुछ बेईमान लोग जीवनरक्षक दवाइयों और आक्सीजन एवं इससे जुड़े सामग्रियों की बेखौफ़ कालाबाजारी करने में लगे हुए थे, और रातों-रात मोटी कमाई कर अमीर बनना चाहते थे दो सौ, तीन सौ की दवाइयों को बारह हजार से भी ऊपर महंगे दामों में बेच रहे थे। कुछ लोग नकली इंजेक्शन बनाकर ऊँचे कीमत वसूल रहे थे और लोगों की जिन्दगी से खिलवाड़ कर रहे थे। जहाँ लोगो को मदद करने की जरूरत थी वहाँ पर उन्होंने लोगों की लाचारी का गलत फ़ायदा उठाया। कैसे निर्दयी और बेशर्म लोग है इस दुनिया में। इंसानियत नाम की चीज नहीं, ऐसे लोगो को सलाखों में जाना ही उचित है और भारतीय कानून के अनुसार कठिन से कठिन सजा दी जानी चाहिए।

फ़िलहाल कोरोना महामारी गयी नहीं है। किसी- किसी देशों में तीसरी लहर और चौथी लहर तक भी आयी है इसलिए देश की जनता को हमेशा जागरूक एवं सतर्क रहना चाहिए। वाहनों में यात्रा करते वक्त और पूजापाठ के समय शादी-विवाह के समय, पार्टी- पार्टी के समय, दाह संस्कार के समय जरूरत से ज्यादा भीड़ नहीं करना चाहिए। कोरोना से बचाव के तरीकों का पालन जैसे: मास्क अच्छी तरह से पहनना, छः गज की दूरी बनाये रहना, सैनिटाइजर का इस्तेमाल करना, बार- बार अपने हाथों को साबुन से अच्छी तरह से धोना, वैक्सीन लगवाना, नमस्ते करना, हाथ नहीं मिलाना, इत्यादि। कोरोना योद्धाओं को अस्पतालों में कार्य करते समय कोरोना किट का उपयोग करना चाहिए एवं सरकार अथवा प्रशासन द्वारा चलाए जा रहे कोरोना से बचाव के नियमों का हमेशा पालन करना चाहिए और सबको अविलम्ब कोरोना का वैक्सीन अवश्य लगवाना चाहिए।

इसी प्रयासों से हम कोरोना को हरा सकते हैं। तभी देश कोरोना मुक्त हो सकेगा, तभी हमें कोरोना महामारी से मुक्ति मिलेगी, तभी हम कोरोना से जीतेगे और तभी भारत जीतेगा।

{ माँ नहीं तो और कौन }



श्री नवीन कुमार चौबे

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कोई इतना विद्वान कहाँ,
जो जन्म लेते चल पड़े।
थामकर उंगली हमारी
कोई डगमगाते कदम सवौरे।
कोई इतना महान कहाँ,
जो जन्म लेते बोलना जाने।
एक एक शब्द सजाकर
कोई हमारी जुबान निखारे।
गुरु हमारा वो
माँ नहीं तो और कौना
जब मन हमारा उदास हो
कोई परी लाती है।
चुपके से कोई जादू कर
मुस्कान छोड़ जाती है।
जब मुसीबत पास भटक हमारे।
कोई बिन कहे मदद को आए।
हर आँसू छीन कर हमारे
कोई हिम्मत बाँट जाए।
दाता हमारी वो,
माँ नहीं तो और कौना

ठेस पर लड़खड़ाते जब
कोई लाठी बन आती है।
बिना कोई स्वार्थ के
हर चोट पर मलहम लगाती है।
दो हथेली राह रोके हमारी
गलत राह चले जब,
भूल पर पछताए जो,
वही हथेली आँसू पोछे तब।
साथी हमारा वो
माँ नहीं तो और कौना
कहते हैं खुदा वो
हर पल साथ रह सकता नहीं।
वक्त निकाल थोड़ा उसने
माँ को बनाया तभी।
झूठ है सारे कथन,
विश्वास ना कर सकूँ।
जन्म जब माँ ने दिया
तो पूजा उसकी क्यों करूँ।
रचयिता हमारा वो
माँ नहीं तो और कौना

सच्चा दोस्त

एक गाँव था जिसका नाम रायपुर था। उस गाँव में दो दोस्त रहते थे। एक दोस्त का नाम मिलन और दूसरे दोस्त का नाम अजीत था। उन दोनों दोस्त के माता-पिता कोई नहीं थे। वह दोनों दोस्त अकेले और एक ही घर में रहते थे। वह दोनों कुछ ना कुछ काम करके पैसा लाकर अपना गुजारा करते थे। एक दिन उन्होंने सोचा कि हम काम तो कर ही रहे हैं पर अब हमें यह देश और दुनिया कैसी है यह देखनी चाहिए। इसलिए वह दोनों के पास जितना पैसा था वह लेकर उन्होंने दुनिया घूमने का निर्णय लिया। अजीत ने कहा कि-" हम घूमते-घूमते उस जगह से पैसे भी कमा लेंगे। जिससे पैसे की कमी भी नहीं होगी। उससे हम बहुत अच्छे से घूम सकेंगे और इस तरह पूरी दुनिया भी घूम लेंगे।"

एक दिन वे दोनों घूमते-घूमते राण में पहुँचे। वहाँ अजीत पानी की बोतल से पानी पीने लगा। मिलन अजीत को पानी की बोतल से पानी पीने से रोकने लगा। उसने अजीत को कहा कि-"सावधानी से पानी पीना और बहुत ज्यादा पानी मत पीना।" यह सुनने के बावजूद भी अजीत ने पानी का बोतल खाली कर दिया। यह देखकर मिलन को बहुत गुस्सा आया। उसने गुस्से में आकर अजीत को चाँटा लगा दिया। उसने कहा कि-"हम राण में हैं, हमें यहाँ पानी जरूरत कभी भी हो सकती है। तुम्हें पता नहीं है कि पानी यहां राण में मिलना कितना मुश्किल होगा। इसलिए तो मैं तुम्हें मना कर रहा था।" तब अजीत ने रेत में लिखा कि-" मुझे मिलन ने चाँटा लगाया।" ऐसा लिखने के बाद दोनों दोस्त आगे बढ़ गए। उन्होंने दूर एक पानी का तालाब देखा। दोनों ये देखकर बहुत खुश हो गए। उन्होंने पहले अपनी बोतल भरी। बोतल भरने के बाद दोनों तालाब में नहाने लगे। अजीत नहाते-नहाते तालाब में अचानक डूबने लगा। तब मिलन ने उसकी जान बचाई। उसकी जान बचाने के लिए अजीत ने मिलन को धन्यवाद दिया। मिलन ने भी अजीत को चाँटा लगाने के लिए माफी मांगी। वह दोनों फिर से अच्छे से बात करने लगे।

फिर उन्होंने एक पेड़ के नीचे कुछ समय आराम करने की सोची। पेड़ के नीचे कुछ समय आराम करने के बाद अजीत ने वहाँ एक पत्थर पर लिखा कि-" मिलन ने मेरी जान बचाई।" यह देखकर मिलन ने पूछा कि यह तुम क्या कर रहे हो? पहले तुमने रेत पर लिखा और फिर पत्थर पर लिखा। अजीत ने कहा कि-" जब तुमने मुझे चाँटा मारा वह याद रखने जैसी कोई चीज नहीं थी इसलिए मैंने उसे रेत पर लिखा जिससे वह हवा आने पर मिट जाए। जब तुमने मेरी जान बचाई वह हमेशा याद रखने की चीज है इसलिए मैंने उसे पत्थर पर लिखा जिसे कोई भी मिटा ना सके।"

सुश्री सागरिका साहू

पिता- श्री गणेश्वर साहू, लेखापरीक्षक

{ पर्यावरण हमारा भविष्य है }



श्री मिन्टू हालदार
लेखापरीक्षक

आज वैश्विक पर्यावरण संकट में है। पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए पर्यावरण के साथ सौहार्द-पूर्ण संबंध बनाए रखना आवश्यक है। मानव सहित सभी जीवों का अस्तित्व पर्यावरण पर निर्भर करता है। क्योंकि पर्यावरण जीवन का वाहक है। तो जोखिम भरा वातावरण जीवन के अस्तित्व के लिए खतरा है। लोग पर्यावरण को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार ढाल रहे हैं; इसी तरह, सभ्यता के विकास के साथ, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ, लोग एक ऐसी स्थिति में पहुँच गए हैं जहाँ पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है और जीवन का अस्तित्व क्षतिग्रस्त हो रहा है। जनसंख्या वृद्धि, अनभिज्ञता और अनियोजित नियोजन पर्यावरण प्रदूषण के कुछ कारण हैं। इसलिए वर्तमान संदर्भ में पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण करना सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। क्योंकि इस पर्यावरण संकट के लिए पूरी मानव जाति जिम्मेदार है।

हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस दिन हम सभी शपथ लेते हैं कि हम प्रदूषण कम करेंगे और पर्यावरण को स्वच्छ रखने में मदद करेंगे। पर अगले ही दिन हम सब कुछ भूल जाते हैं। यह संसार हमारा एकमात्र ठिकाना है। अगर हम पर्यावरण को नष्ट कर लेंगे तो भविष्य में कुछ नहीं बचेगा। पर्यावरण की रक्षा करना हमारी जिम्मेदारी और कर्तव्य है। इसके लिए हमें जागरूक रहना होगा। तभी हमारा और पर्यावरण का भविष्य उज्ज्वल होगा।

ईश्वर की मर्जी

एक बच्चा अपनी माँ के साथ एक दुकान पर शॉपिंग करने गया तो दुकानदार ने उसकी मासूमियत देखकर उसको सारी टॉफियों के डिब्बे खोलकर कहा कि लो बेटा टॉफियां ले लो, पर उस बच्चे ने भी बड़े प्यार से उन्हें मना कर दिया।

इसके बावजूद उस दुकानदार और उसकी माँ ने भी उसे बहुत कहा पर वह मना करता रहा। हारकर उस दुकानदार ने खुद अपने हाथ से टॉफियां निकाल कर उसको दीं तो उसने ले लीं और अपनी जेब में डाल लीं।



वापस आते हुए उसकी माँ ने पूछा, "जब अंकल तुम्हारे सामने डिब्बा खोल कर टॉफियां दे रहे थे तब तुमने नहीं लीं और जब उन्होंने अपने हाथों से दीं तो ले लीं, ऐसा क्यों?" तब उस बच्चे ने बहुत खूबसूरत जवाब दिया " मेरे हाथ छोटे-छोटे हैं। अगर मैं टॉफियां लेता तो 2-3 टॉफियां ही आतीं जबकि अंकल के हाथ बड़े हैं इसलिए ज्यादा टॉफियां मिल गई।"

बिल्कुल इसी तरह जब भगवान हमें देता है तो वह अपनी मर्जी से देता है और वह हमारी सोच से परे होता है, हमें हमेशा उसकी मर्जी में खुश रहना चाहिए। क्या पता वह किसी दिन हमें पूरा समुद्र देना चाहता हो और हम हाथ में चम्मच लेकर खड़े हों।

श्री कृष्णचंद बेहरा
एम. टी. एस.

गोलघर



श्री राजु कुमार

आ०प्र०प्र० “बी”

पटना का गोलघर एक ऐतिहासिक धरोहर है। यह बिहार की शान और राजधानी पटना की पहचान है। यह राजधानी पटना के गाँधी मैदान के पश्चिम में स्थित है। गोलघर 235 साल पुराना है। इसे 1979 में राज्य संरक्षित स्मारक घोषित किया गया था।

1770 में आई भयंकर सूखे के दौरान करीब एक करोड़ लोग भुखमरी के शिकार हुए थे। तभी तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग ने गोलघर के निर्माण की योजना बनाई। ब्रिटिश इंजिनियर कप्तान जॉन गार्स्टिन ने अनाज के भंडारण के लिए गोल ढाँचे का निर्माण 20 जनवरी 1784 को शुरू किया। ब्रिटिश फौज के लिए इसमें अनाज सुरक्षित रखने की योजना थी। इसका निर्माण कार्य ब्रिटिश राज में 20 जुलाई 1786 को पूरा हुआ। इसमें एक साथ 1,40,000 टन अनाज रखने की क्षमता है।

गोलघर का आकार 125 मीटर है। इसकी ऊँचाई 29 मीटर है। इसमें कोई पिलर नहीं है। इसकी दीवारें आधार में 3.6 मीटर मोटी हैं। गोलघर की हाइट यानी शिखर पर करीब तीन मीटर तक ईंट की जगह पत्थरों का इस्तेमाल किया गया है। गोलघर के शीर्ष पर दो फीट सात इंच व्यास का छिद्र अनाज डालने के लिये छोड़ा गया था। जिसे बाद में भर दिया गया। इसमें 145 सीढ़ियाँ हैं, जिसके सहारे आप इसके ऊपरी सिरे पर जा सकते हैं। जहाँ से पटना शहर के एक बड़े भाग और गंगा नदी के विस्तृत दृश्य को देख सकते हैं। गोलघर के अंदर एक आवाज 27-32 बार प्रतिध्वनित होती है, जो अपने आप में अद्वितीय है।

पटना आने वाले एक बार जरूर इस ऐतिहासिक धरोहर का दीदार करते हैं। ये एक प्रमुख पर्यटक स्थल है। यहां पर संगीत फव्वारा का भी इंतजाम किया गया है। अगर आपने अभी तक इसको नहीं देखा तो एक बार इसे जरूर देखिए।

{ हिंदी दिवस-2020 }

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर में दिनांक 14 सितंबर 2020 को हिंदी दिवस का सफल आयोजन किया गया।

14 सितंबर 2020 को हिंदी दिवस का शुभारंभ श्री दुसासन बेहेरा, उप निदेशक महोदय की अध्यक्षता में किया गया। इस वर्ष वैश्विक महामारी कोविड-19 के कारण कोई भी विशेष कार्यक्रम का आयोजन नहीं किया जा सका तथा सामाजिक दूरी का पालन करते हुए हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय के परामर्श से वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / राजभाषा ने केन्द्रीय गृह मंत्री माननीय अमित शाह जी के संदेश से सभा को अवगत कराया। तत्पश्चात उप निदेशक के द्वारा सभा को संबोधित किया गया। उप निदेशक ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए अधिकारी/कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया। कार्यालय के कुछ वरिष्ठ अधिकारी/कर्मचारियों ने हिंदी से संबंधित अपना अपना विचार प्रस्तुत किया।

अंत में सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए हिंदी दिवस 2020 कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

हिंदी के प्रगामी प्रयोग में वृद्धि हेतु कोविड - 19 वैश्विक महामारी को देखते कार्यालय की तरफ से यह एक सफल एवं प्रशंसनीय प्रयास था।

राजभाषा अनुभाग

आपके पल



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नई का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI



रा.प्रति.ले.प.के. (हिंदी अनुभाग/14-02/2021-22/84

दिनांक: 18.08.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
महाप्रदेश लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन,
मुंबई-751017 (ओडिसा)

विषय: हिंदी ई-पत्रिका 'धर्मपद' के नौवें अंक की प्रगति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका 'धर्मपद' का नौवां अंक इस कार्यालय में ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक हैं। श्री पुष्पोत्तम किशोर कुल 'रहस्यमय पहाड़' रोचक, श्रीमती विद्या अजितका ठेका कुल 'बहने वो सरस्वती की धारा' शिक्षाप्रद, श्रीमती लुचिना कर्मकर कुल 'जीत पक्की है' प्रेरणादायक एवं श्रीमती सुस्मिता कुमारी कुल 'बिडिया' हृदयस्पर्शी है। पत्रिका के संपन्न प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उत्कृष्ट भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

डि. प्र. 11.08.2021

परिचय लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
5/6

लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्ण लाल, तेयनपेट, चेन्नई - 600 011, 'LEKHA PARIKSHA BHAVAN', 361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI - 600 011.
Phone : 91-044-2431 6406, Fax: 91-044-24338924, E-mail : dgacchenai@cag.gov.in



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय पद्मान महासेवाकर (लेखापरीक्षा) जम्मू व कश्मीर, जम्मू 180001
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) J&K, JAMMU 180001



रा.प्रति.ले.प.के. (हिंदी अनुभाग) प्रतिक्रिया/ 2021-22/ 28
दिनांक: 18-08-2021

सेवा में,
श्री दीपक कुमार दास जी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक (लेखापरीक्षा),
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन,
मुंबई-751017
(ओडिसा)

विषय: वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'धर्मपद' के 9 वें ई-संस्करण की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'धर्मपद' के 9 वें अंक की मेल के माध्यम से ई-पत्रिका प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, कविताएँ, आदि रोचक पठनीय एवं जानवरीक हैं। सभी रचनाकारों ने अपने-अपने विषय के अनुसार रचनाओं का बहुत ही सुंदर तरीके से वर्णन किया है, इसके लिए ये सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर कोयल मंदिर की पृष्ठ भूमि पर नृत्यांगना का चित्र बहुत ही सुंदर है तथा पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर तिरंगेयवी रोशनीयों में रंगे कार्यालय की आभा देखते ही बनती है। हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए आवश्यक सुझाव बहुत ही प्रशंसनीय है। निरासदेह, यदि इन सुझावों को कार्यालय के कार्यात्मक अपने व्यवहार में लाएंगे तो राजभाषा का प्रचार-प्रसार और प्रयोग दोनों ही बढ़ेंगे। 'ग' श्रेण में होते हुए आपका पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के प्रचार-प्रसार का कार्य बहुत ही सराहनीय है और सभी रचनाकारों की हिंदी लेखन प्रतिभा भी बहुत ही प्रशंसनीय है। पत्रिका में कर्वालीय चित्रों ने पत्रिका को और भी शिखर है। पत्रिका की सज-सज्जा आनंद है। पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इसी शुभ-कामनाओं के साथ अगले अंक (हाउ कॉपी) की प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका के संपन्न संपादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

भवदीय,

विनीत देव

व.लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)



महासेवाकर (ले. व. ह.) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, रोड नं. 33-बी, चण्डीगढ़-160020
टेलीफोन नं. 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं. 0172-2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAVAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No. 0172-2603824
E mail - agaharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्षा/प्रति.प्रति./2021-22/104
दिनांक: 25.08.2021

सेवा में

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा),
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन,
मुंबई-751017, ओडिसा।

महोदय,

विषय: वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'धर्मपद' के 09वें अंक के सम्बन्ध में

आपके कार्यालय के पर दिनांक 09.08.2021 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'धर्मपद' के 09वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्पत्तीय, जानवरीक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री राजेश कुमार पटेल का लेख 'संत कबीर के प्रेरणादायक दोहे', श्री सूरज कुमार का लेख 'कोरोना काल में निर्गुण' एवं श्रीमती स्वाति महापात्र का लेख 'तस्मानिया यात्रा' बहुत ही जानवरीक लेख हैं।

इसके अतिरिक्त श्री शीमल दास की कविता 'कोरोना के इस डगर में', श्रीमती दिव्या अंजलि का लेख 'बहने दो सरस्वती की धारा' एवं सुश्री वी. श्यामला की कविता 'जिंदगी में रिश्ते का स्वाद' पठनीय हैं।

इसके अतिरिक्त श्री पुष्पोत्तम किशोर की बहानी 'रहस्यमय पहाड़' पठनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

पूजा सिंह
हिंदी अधिकारी



रा.प्र.ले.प.के. (हिंदी अनुभाग) प्रतिक्रिया/ 2021-22/ 104
No.
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय, महासेवाकर (लेखापरीक्षा), बिहार
चौराबदा पटेल मार्ग, पटना-800 001
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Accountant General (Audit), Bihar
Chaurabada Patel Marg, Patna-800 001
विषय/Date: 01.09.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा वर कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, मुंबई-751017

विषय: वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'धर्मपद' के 9वें अंक के प्रतिभाव का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'धर्मपद' के 9वें अंक की ई-प्रति मिली। सहर्ष बधाई एवं धन्यवाद। पत्रिका के इस अंक में बहुत-बहुत विषयों पर केंद्रित भारतीय मानविक रचनाओं को संकलित किया गया है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत आकर्षक है।

इस अंक में सम्मिलित 'ये खेल नहीं जीवनगाथा है, हमारे जीवन में रिश्ते का महत्व', 'कोरोना वायरस: त्रिकोण एवं प्रदूषण', 'नालंदा विश्वविद्यालय शोधक रचनाएँ समसामयिक, प्रासंगिक विषयों पर केंद्रित हैं, जो विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं पठनीय हैं। सिलप की हृष्टि से भी ये उत्कृष्ट हैं।

राजभाषा हिंदी के उन्नयन और कामिकों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने में 'धर्मपद' ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। इसका भविष्य और उज्जवल हो, इसी कामना के साथ समस्त पत्रिका परिवार को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी)

टैलफोन: 2221236, 2221041, 2223725, 2223194, 2300091, 2300253 ई.मेल: lepa@agabihar@cag.gov.in ई.मेल: lepa@agabihar@cag.gov.in
फैक्स: 0512-250 6223, 2508207 ई.मेल: lepa@agabihar@cag.gov.in पं. नं. बिहार/प.ब.नं. 47

आपके पत्र



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
UTTARAKHAND



पत्रांक: हिन्दी/सामान्य-वित्त/25-2018-2019/184
दिनांक: 23.08.2021

सेवा में,

1414

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/राजभाषा
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, (ओडिशा)
भुवनेश्वर-751017,

विषय: वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "धर्मपद" के 9वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "धर्मपद" के 9वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में छपी समस्त लेख व रचनाएँ स्तरीय एवं रोचक हैं। पत्रिका के इस सुंदर अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में आपका प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

"महालेखाकार पवन", कोलकाता, देहरादून - 248195, 'Maha Lekhakar Bhawan', Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone: 0135 - 2970870 / फ़ैक्स / Fax: 0135 - 2970871, ई-मेल / E-mail: agauuttarakhand@cac.gov.in



भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग
प्रधाननिदेशक लेखापरीक्षा, केंद्रीय, मुम्बई, का कार्यालय,
सी-25, ऑडिट भवन, आचर भवन के पीछे,
बांद्रा-कुली संकुल, बांद्रा (पूर्व), मुम्बई-400051
(EPABX) 26571750 Extn. 221/242/243246
FAX: 2657 2451 / 1737 E-mail - dgacmum@vsnl.com

पत्रांक: म.नि.ले.ए/के/रा.भा.अ.पत्रिका समीक्षा/16

दिनांक: 3/10/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/राजभाषा
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, भुवनेश्वर-751017 (ओडिशा)

विषय:- वार्षिक हिन्दी पत्रिका "धर्मपद" के नौवें अंक का ई-प्रकाशन की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिन्दी पत्रिका "धर्मपद" के नौवें अंक का ई-प्रकाशन की प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ, रूपसज्जा, छायाचित्र एवं समाहित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय एवं उच्च स्तर के हैं। श्री विभास चन्द्र की 'ये खेल नहीं जीवन गाथा है', श्री दीपक कुमार दास की 'समस्या', श्री तीर्थ दास की 'कोरोना के इस डगर पे', सुश्री सुष्मिता कुमारी की 'बिटिया', सुश्री बी. श्यामला की 'जिन्दगी में रिश्ते का स्वाद' एवं श्री प्रभात रजन की 'बदलत चल' एवं अन्य सभी रचनाएँ पठनीय हैं। हिन्दी भाषा के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

व.ले.प.अ./राजभाषा

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बेंगलूर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO
MEMBER AUDIT BOARD, BENGALURU - 560001.

सं.हि.प्रशा.-2021-22/ 83

दिनांक- 10.08.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /राजभाषा,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्वी तट रेलवे, रेल सदन,
भुवनेश्वर, ओडिशा - 751017

विषय:- प्रशंसा पत्र।

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई - पत्रिका "धर्मपद" के 9 वें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। पत्रिका में सम्मिलित श्री विभास चंद्र का लेख "ये खेल नहीं जीवन गाथा है", श्री पुरुषोत्तम किशोर का लेख "रहस्यमय पहाड़" श्री सुरज कुमार का लेख "कोरोना काल में निर्वाण" आदि पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्रीमती नीतू चंद्रा के लेख "सुशांत सिंह केस एवं मीडिया ट्रायल" में पाठक वर्ग का ध्यान अपनी ओर खींचा है क्योंकि यह लेख कलई लीक से हटकर है। पत्रिका की सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यालय की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीय

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग,
कोलकाता - 700 001



INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-1),
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal@cac.gov.in

संख्या: हिन्दी कक्षा/हिन्दी पत्रिका/पावती/109
दिनांक: 31.08.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पूर्व तट रेलवे
रेल सदन, ओडिशा, भुवनेश्वर - 751017

विषय : राजभाषा हिन्दी वार्षिक ई-पत्रिका "धर्मपद" के नौवें अंक (वर्ष 2020) की पावती।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी वार्षिक ई-पत्रिका "धर्मपद" के नौवें अंक (वर्ष 2020) की ई-प्रति ई-मेल के माध्यम से दिनांक 06.08.2021 को प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक हैं। आपका कार्यालय के "ग" क्षेत्र में होते हुए भी हिन्दी के प्रति सहभागिता अत्यंत ही सराहनीय है। एक अनुरोध है कि हमारे कार्यालय द्वारा भेजे गये पावती को पत्रिका के अगले अंक के "आपके पत्र" में जरूर शामिल करें।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए ढेर सारी शुभकामनाएँ।

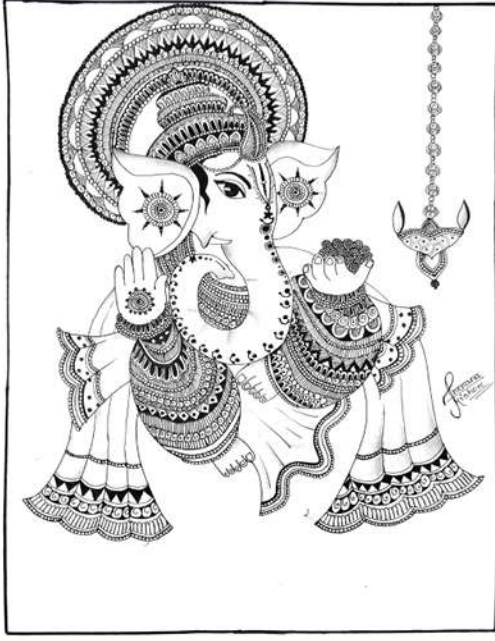
भवदीय,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्षा)

{ हिंदी दिवस-2020 की झलकियाँ }



चित्रकला की एक झलक



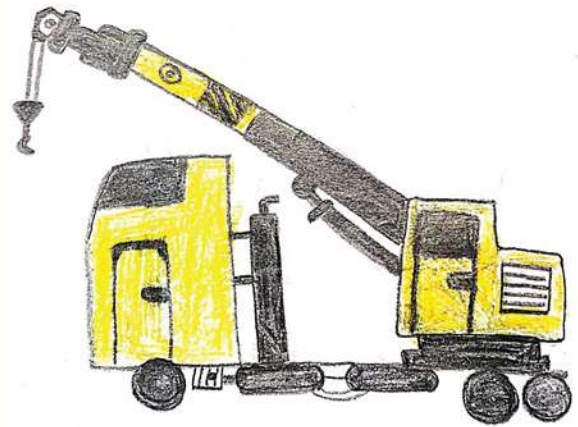
प्रेरणा किशोर, कक्षा- यू.जी.+III
पिता- श्री जय किशोर, सहा. ले.प. अधिकारी



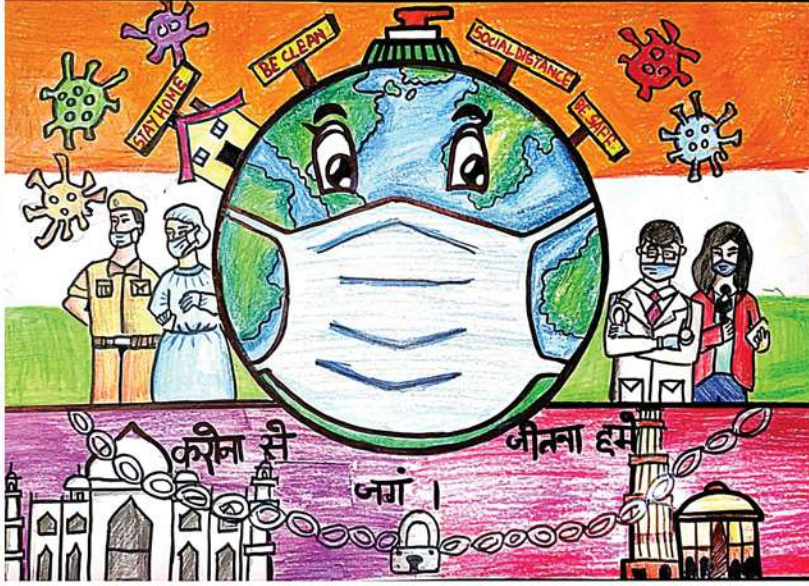
अर्पिता साहू, कक्षा- यू.जी.+III
पिता- श्री प्रदीप कुमार साहू, कल्याण सहायक



निहारिका साहू, कक्षा- III
पिता- श्री गणेश्वर साहू, लेखापरीक्षक



मनन राज, कक्षा- III,
पिता- श्री दीपक कुमार दास, वरि.ले.प. अधिकारी



आशुतोष पंडा, कक्षा- VII,
पिता-श्री दिगंबर पंडा, लिपिक
संबलपुर



ज्योतिरादित्य साहू, कक्षा- X,
पिता-प्रदीप कुमार साहू,
कल्याण सहायक



मनन राज , कक्षा- III,
पिता-दीपक कुमार दास,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

{ हिंदी कार्यशाला की एक झलक }

दिनांक- 17.03.2021



{ हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी की एक झलक }

दिनांक- 14.12.2020



विदाई समारोह की एक झलक



श्री अशोक कुमार राय, वरिष्ठ लेखा परीक्षक
सेवानिवृत्ति की तिथि- 31.05.2020





चित्र साभार- सुश्री अर्पिता साहू
पिता- श्री प्रदीप कुमार साहू, कल्याण सहायक